RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

वर्ष-12, अंक-06, हिन्दी (मासिक), जून 2025, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

60 लाख सेवानिवृत्त सैनिकों को देंगे सेल्फ इम्पावरमेंट और हार्मनी ऑफ लाइफ के टिप्स

60 लाख सेवानिवृत्त सैनिकों को कवर करने की है योजना

430 सेना के पॉली क्लीनिक के सहयोग से चलाएंगे कैंपेन

02 साल तक हर माह प्रत्येक पॉली क्लीनिक में करेंगे कार्यक्रम

रक्षा मंत्रालय के तहत संचालित एक्स सर्विसमेन कन्ट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम (ईसीएचए) के साथ ब्रह्माकुमारीज़ ने साइन किया एमओयू

- केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कैंपेन का किया शुभारंभ
- गृह मंत्री अमित शाह बोले- कैंपेन के लिए ब्रह्माकुमारी को साधुवाद

बढ़ती मानसिक समस्याओं को देखते हुए शुरू की पहल

देशभर में तेजी से बढ़ती मानसिक समस्याओं, टेंशन, चिंता-दुख, डिप्रेशन को देखते हुए यह कैंपेन शुरु किया गया है। शोध में सामने आया है कि 90 फीसदी बीमारियों का कारण तनाव या डिप्रेशन है। यदि पूर्व सैनिकों का जीवन खुशहाल, तनावमुक्त और आनंदित रहेगा तो इससे एक्स सर्विसमेन कन्ट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम (ईसीएचए) पर हर माह आने वाला मेडिकल का खर्च कम हो सकेगा।

सेल्फ एम्पावरमेंट के तहत इसकी देंगे ट्रेनिंग

- हार्मनी ऑफ लाइफ़
- आर्ट ऑफ लिविंग
- राजयोग मेडिटेशन
- माइंड मैनेजमेंट
- स्ट्रेस मैनेजमेंट
- टाइम मैनेजमेंट
- स्लीप मैनेजमेंट
- लाइफ मैनेजमेंट
- सेल्फ मैनेजमेंट

सेना के सशक्तिकरण के लिए समर्पित है सुरक्षा सेवा प्रभाग

सुरक्षा सेवा प्रभाग भारत की तीनों सेनाओं के साथ पुलिस, अर्धसैनिक बल और अन्य सुरक्षा एजेंसियों में सेवाएं प्रदान करता है। प्रभाग द्वारा हर वर्ष मुख्यालय शांतिवन और माउंट आबू के ज्ञान सरोवर परिसर में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। इसमें देशभर से तीनों सेनाओं के अधिकारी और जवान शामिल होते हैं। इसके अलावा सेना के रेजीमेंट, कैंटेन बोर्ड, मुख्यालय आदि में मोटिवेशनल वर्कशॉप के जरिए जवानों को स्ट्रेस फ्री लाइफ के मंत्र सिखाए जाते हैं।

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

भारत की तीनों सेना (जल सेना, थल सेना, वायु सेना) से सेवानिवृत्त अधिकारी और जवानों को हार्मनी ऑफ लाइफ और आर्ट ऑफ लिविंग के मंत्र सिखाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ ने नई पहल शुरू की है। इसके लिए संस्थान द्वारा बाकायदा देशभर में सेल्फ एम्पॉवरमेंट कैंपेन चलाकर पूर्व अधिकारी, सैनिकों और उनके परिवारों को जोड़ा जाएगा। इस कैंपेन का राष्ट्रीय शुभारंभ मुख्यालय शांतिवन में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग और भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के तहत संचालित एक्स सर्विसमेन कन्ट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम (ईसीएचए) ने दो साल के लिए एक एमओयू साइन किया है। रक्षा मंत्री की मौजूदगी में ईसीएचए के अधिकारियों और ब्रह्माकुमारीज़ के पदाधिकारियों ने एमओयू पर साइन किए। इस पहल को स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण (सेल्फ एम्पॉवरमेंट) कैंपेन नाम दिया गया है। एमओयू के तहत दो साल तक सुरक्षा सेवा प्रभाग के सदस्य सेना के देशभर में स्थित 430 पॉली क्लीनिक में संपर्क कर स्थानीय सैनिकों को जोड़ेंगे। इनमें 26 पॉली क्लीनिक मंजूर हो गए हैं जिनकी शुरुआत जल्द हो जाएगी। कुल 456 पॉली क्लीनिक में कैंपेन चलाया जाएगा।

हर माह होंगे सम्मेलन और सेमीनार

सुरक्षा सेवा प्रभाग में सेवा दे रहा नेवी के सेवानिवृत्त कमोडोर ए. घोषाल ने बताया कि कैंपेन में हर माह पॉली क्लीनिक में काउंसलिंग, मोटिवेशनल वर्कशॉप, सभा- सम्मेलन और सेमीनार आयोजित किए जाएंगे। इनके माध्यम से पूर्व सैनिकों को मानसिक और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाया जाएगा। साथ ही उन्हें अध्यात्म के साथ-साथ राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा देकर मन को सशक्त बनाने की विधि सिखाई जाएगी। हर व्यक्ति जब संपूर्ण रूप से सशक्त व मजबूत होगा, तभी वह दूसरों की मदद कर पाएगा। इसी भावना को लेकर कैंपेन की शुरुआत की गई है।

यह अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है

सशस्त्र बलों, सुरक्षा कर्मियों के त्याग-तप और बलिदान के कारण आज हम सुरक्षित हैं। आंतरिक सुरक्षा की बात करें तो सेना और सीआरपीएफ छोड़कर सभी राज्यों की पुलिस भी कानून और व्यवस्था की स्थिति संभालकर संरक्षण देने का काम करती है। परंतु यह काम एक प्रकार से ढेर सारा तनाव पैदा करने वाला है। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हमारे सुरक्षा कर्मियों को बाहर लाकर उनका मन, आत्मा और शरीर को शांति का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करना, अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है। मैं ब्रह्माकुमारी को इसके लिए बहुत-बहुत साधुवाद देना चाहता हूं।

- अमित शाह, गृह मंत्री, भारत सरकार

प्रमुख गतिविधियां

- **राजयोग ध्यान प्रशिक्षण:** सुरक्षा कर्मियों को मानसिक शांति और आत्म-संयम के लिए राजयोग ध्यान सिखाया जाता है।
- **मानव मूल्य आधारित सेमिनार:** नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित सेमिनार आयोजित किए जाते हैं।
- **सामूहिक ध्यान सत्र:** सुरक्षा बलों के लिए सामूहिक ध्यान सत्र आयोजित किए जाते हैं, जिससे उन्हें आंतरिक शांति और स्थिरता प्राप्त हो।
- **सामाजिक सेवा कार्यक्रम:** समाज में सुरक्षा और सेवा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

रक्षा मंत्री बोले- यह कैंपेन राष्ट्र को और मजबूत करेगा

अभियान की जो थीम है- आत्म सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण यह थीम अपने आप में बेहद इंट्रेस्टिंग है। पूरी दुनिया में फिलहाल इस तरह की स्थितियां हैं। इसलिए यह थीम और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह कैंपेन राष्ट्र को और मजबूत करेगा। जो भारतभर में सूर्यवीर बैठे हैं उनको आत्मिक शक्ति देगा। उनका यहां आने पर आत्म रुपांतरण होगा। आत्म रुपांतरण बीज है और राष्ट्रीय रुपांतरण उसका फल है। आत्म रुपांतरण करने का यह अभियान योग, सकारात्मक चिंतन और आत्म संवाद के माध्यम से हमारे वीर जवानों को मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक बल देगा। मैं इसके लिए शीश झुकाकर आपका अभिनंदन करता हूं।

- राजनाथ सिंह, केंद्रीय रक्षा मंत्री, भारत सरकार

ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग के साथ दो साल के लिए एमओयू साइन किया गया है। हमारा मकसद है कि पूर्व सैनिकों के जीवन में हार्मनी हो, वह आनंदित और खुशहाल जीवन जीएं। इसके लिए उन्हें अध्यात्म और योग, राजयोग मेडिटेशन से जोड़ने की पहल शुरू की गई है। यह कैंपेन दो साल तक चलाया जाएगा।

- मेजर जनरल मनोज नटराजन, एमडी, ईसीएचएस

राजयोग साधना से यहां आध्यात्मिक ऊर्जा की तरंगे फैल रही हैं: रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह

- रक्षामंत्री बोले- ब्रह्माकुमारी की जो बातें सुन ले तो शातिर भी सन्यासी बन जाए।
- पांच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित
- 400 से अधिक अधिकारी व जवानों ने लिया भाग

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय शांतिवन में आयोजित सुरक्षा सेवा प्रभाग के पांच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शिरकत की। इस दौरान उन्होंने सेल्फ एम्पॉवरमेंट कैंपेन की लांचिंग भी की। कार्यक्रम में आमजन सहित देशभर से 400 से अधिक सेना के अधिकारी और जवानों ने भाग लिया।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 42 मिनट के अपने संबोधन में योग से लेकर अध्यात्म, सेना, भारतीय अर्थव्यवस्था और सेल्फ एम्पॉवरमेंट पर बात की। उन्होंने कहा कि मैं एक योगी और सैनिक में खास अंतर नहीं देखता हूं। साधक के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य और ध्येय मानवता की सेवा करना ही होता है। सैनिक और साधक दोनों एक सुरक्षित, बेहतर और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना के लिए कार्य करते हैं। एक सच्चे सैनिक के अंदर एक साधक और एक साधक के अंदर एक सैनिक जरूर विद्यमान रहता है। सैनिक जो सीमा पर हमारी सुरक्षा कर रहे हैं वह योग साधना का ही एक रूप है। राष्ट्र की रक्षा केवल शस्त्र से नहीं होती है, यह होती है चेतना से, चरित्र से और चैतन्यता से। इसके लिए आध्यात्मिकता और योग सबसे बड़ा साधन है। यह अभियान महत्वपूर्ण इसलिए भी है कि हम अपने सैनिकों को केवल शस्त्रधारी नहीं बल्कि शास्त्रधारी भी बना सकें। हम केवल उन्हें लड़ाई के लिए नहीं बल्कि आत्म बल के लिए भी तैयार कर सकें।

यहां आध्यात्मिक तरंगे तैर रही हैं-

रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि यहां ब्रह्माकुमारीज ने राजयोग साधना के माध्यम से ऊर्जा की तरंगों को फैलाया है। यह मैं सहज अनुभव कर सकता हूं। यहां अद्भुत बाइब्रेशन हैं। यहां कहीं मंदिर नहीं है, गिरिजाघर, मस्जिद नहीं हैं। लेकिन फिर भी गजब के बाइब्रेशन हैं। यहां आध्यात्मिक तरंगे तैर रही हैं। यहां मंत्री, सांसद सभी के साथ मिलकर जनता के बीच बैठे हैं। यहां आकर हर कोई अहंकार शून्य हो जाता है। मनुष्य अपने जीवन में अलंकारों से अलंकृत नहीं हो सकता है। मनुष्य अपने जीवन में अपनी कृतियों के कारण ही अलंकृत हो सकता है।

ब्रह्माकुमारीज़ का सैनिक के कल्याण के लिए आगे आना सराहनीय है

रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि आज भारत प्रगति कर रहा है। हमारे जवान सीमाओं पर महीनों गुजर जाते हैं परिवार से कोई संपर्क नहीं हो पाता है। ऐसे वीर जवानों की वजह से ही भारत के लोग चैन की सांस ले पा रहे हैं। एक सैनिक के लिए फिजिकल स्ट्रेंथ के साथ-साथ मेंटल स्ट्रेंथ भी चाहिए होती है। सैनिक घने जंगलों से लेकर ग्लेशियर के बीच लड़ाइयां लड़ते हैं। इसके लिए फिजिकल स्ट्रेंथ के साथ मेंटल स्ट्रेंथ होना भी जरूरी है। सैनिक को विपरीत परिस्थिति में लड़ने की ऊर्जा उनके अंतर्मन से आती है। लंबे समय तक विपरीत परिस्थितियों में सेवा करने के कारण सैनिक का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ का सैनिक के कल्याण के लिए आगे आना सराहनीय कदम है।

एआई के दौर में हमें पूरी दुनिया की खबर है लेकिन खुद की खबर नहीं है

रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि एआई के दौर में हमें देश-दुनिया की पल-पल की खबरें पता चल रही हैं लेकिन हमें यह पता नहीं चल रहा है कि हमारे भीतर क्या चल रहा है। हमारे सैनिक भी पूरी दुनिया की चीजें देखते हैं लेकिन अपने अंदर नहीं झांकते हैं। हम बाहरी दुनिया से तो जुड़ जाते हैं लेकिन अपने आप से नहीं जुड़ पाते हैं।

आस्था सबके प्रति होना चाहिए

सिंह ने कहा कि लोग कहते हैं कि बहुत सारे लोग हैं जो कभी मंदिर नहीं जाते, पूजा नहीं करते, मस्जिद नहीं जाते, इबादत करते हैं फिर भी बड़े मन के लोग हैं। मैंने कहा कि स्प्रीचुअल होने के लिए आवश्यक नहीं है। आस्था सबके प्रति होना चाहिए। मनुष्य का मन जैसे-जैसे बड़ा होता चला जाता है, वैसे-वैसे वह आध्यात्मिक ऊंचाईयों को हासिल करता जाता है। आत्मा एक सर्किल है, जैसे-जैसे मन का सर्किल (परिधि) बढ़ाते जाएंगे उसी अनुपात में आपको सुख, आनंद की अनुभूति होती चली जाएगी। परमानंद की कोई सीमा नहीं होती है। परमानंद जिसको प्राप्त हो गया, उसको परमात्मा की प्राप्ति होती है। इस सृष्टि के संचालन करने वाली जो सत्ता है उसकी प्राप्ति होती है।

झलकियां

- डायमंड हाल पहुंचते ही सबसे पहले रक्षा मंत्री सिंह ने पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी रतन मोहिनी को श्रद्धांजली अर्पित की।
- वरिष्ठ पदाधिकारियों ने राजस्थानी पगड़ी पहनाकर किया स्वागत।
- राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास के दौरान रक्षा मंत्री ध्यान में डूबे नजर आए।
- सुरक्षा सेवा प्रभाग की 25 वर्ष की यात्रा का वीडियो शो दिखाया गया।

संस्था ने भारतीय संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाया है

रक्षा मंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ने नि:स्वार्थ भाव से पूरी मानवता के आध्यात्मिक विकास और आत्मिक बल बढ़ाने के लिए कार्य किया है। सिर्फ भारत ही नहीं दुनिया के सौ से अधिक देशों में लगातार काम कर रहे हैं। जिस तरह से संस्था ने भारतीय संस्कृति और प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाया है, उसके लिए यथारत कभी ब्रह्माकुमारीज़ को भूलेगा नहीं। जो भी यहां आता है तो यहां के स्प्रीचुअल बाइब्रेशन की ग्रिप में आ जाता है। यहां आने के लिए तो दरवाजे खुले हैं लेकिन जाने के लिए नहीं। माउंट आबू की चोटी पर स्थित ब्रह्माकुमारीज का यह सुंदर सा वह केंद्र है जहां अहं ब्रह्मास्मि, मैं ही ब्रह्म हूं की धारणा केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रह जाती है, बल्कि वह मानव की अनुभूति तक पहुंचती है। मैं संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को श्रद्धांजली अर्पित करता हूं। जिन्होंने योग, तपस्या, साधना से लाखों लोगों का जीवन बदला है। इसके पहले मैं गृहमंत्री रहते हुए यहां आया था उनके सान्निध्य और दर्शन मुझे प्राप्त हुआ था।

सुरक्षा सेवा प्रभाग की सेवाओं को सराहा

रक्षा मंत्री ने कहा कि सुरक्षा सेवा प्रभाग लंबे समय से हमारे सेना के जवानों को मानसिक रुप से सशक्त बनाने का कार्य कर रहा है। संस्थान में पूरे राष्ट्र में अध्यात्म का जो जन-जागरण अभियान चलाया है, उससे समाज को एक सकारात्मक दिशा प्राप्ति हुई है।

पहले अपने भीतर के भय को हराना होगा

रक्षा मंत्री ने कहा कि समय की जरुरत है कि चाहे आम नागरिक हों या सैनिक हों, उनके पास आध्यात्मिक शक्ति होनी चाहिए। अध्यात्म, तनाव, चिंता, और भावनात्मक ऊथल-पुथल से निपटने में मदद करेगा। बाहरी दुनिया को जीतने के पहले अपने भीतर के भय को हराना भी जरुरी है। ऐसी स्थिति में योग,ध्यान और अध्यात्म की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। आत्मिक बल हमें अंदर से सशक्त और मजबूत बनाता है। राजस्थान का कण-कण महाराणा प्रताप के शौर्य से वाकिफ है। महाराणा ने घास की रोटी खाना स्वीकार किया, लेकिन कभी अपने स्वाभिमान के आगे नहीं झुके। यह बिना आत्मबल के संभव नहीं है। इस दौरान जिले के प्रभारी मंत्री केके विश्नोई, राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत, सांसद लुंबाराम चौधरी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

गृहमंत्री बोले- ब्रह्माकुमारीज़ ने तपस्या और तेज से दुनियाभर में सादगी, संयम और सहयोग का अद्भुत वातावरण खड़ा किया है

ब्रह्माकुमारीज़ ने सरल तरीके से आत्मा-परमात्मा का ज्ञान 140 देशों तक पहुंचाया है: गृह मंत्री शाह

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

गृहमंत्री अमित शाह ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन पहुंचे। जहां डायमंड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में सुरक्षा सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ और प्रभाग की सिल्वर जुबली की लॉचिंग की। संस्थान की इस वर्ष की वार्षिक थीम- विश्व एकता एवं विश्वास हेतु ध्यान का राष्ट्रीय उद्घाटन भी किया। कार्यक्रम में तीनों सेनाओं के 400 से अधिक अधिकारी, जवान सहित सात हजार लोग मौजूद रहे।

गृहमंत्री शाह ने कहा कि 25 साल से सुरक्षा बलों के तनाव को कम करके अपनी आत्मा को शांति की और कैसे ले जाना है और शांत मन-स्वस्थ शरीर से देश की सुरक्षा को और अच्छे तरीके से करने की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ ने जो प्रयास किया है, वह प्रशंसनीय है। वसुधैव कुटुंबकम की भावना, भारत ने सबसे पहले विश्व को दी। जब पूरे विश्व के अंदर लोग गुफाओं में रहते थे तब पूरा विश्व मेरा परिवार है, ये हमारे उपनिषद की ऋचा ने समग्र विश्व को हमारा परिवार बनाया।

हम कुछ सालों में तीसरे नंबर पर होंगे

हम कुछ ही सालों में विश्व में तीसरे नंबर का अर्थतंत्र बनेंगे। जब आजादी की शताब्दी मनाई जाएगी तो हम विश्व में सर्वोच्च स्थान पर पहुंचने का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। हर मानव के अंदर रही आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ने की शक्ति हमारी परंपराओं में पड़ी है। इसके लिए ब्रह्माकुमारी जैसी संस्थाएं बहुत अच्छे से काम कर रही हैं।

योग के रास्ते से ही विश्व शांति आएगी

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बनाकर हमारी वैदिक परंपरा, ऋषि-मुनियों की सबसे अमूल्य धरोहर को समग्र विश्व को देने का काम किया। आज समूचे विश्व में आज करोड़ों लोग ध्यान और अध्यात्म के रास्ते पर अपने जीवन का कल्याण कर रहे हैं। ये रास्ता ही आने वाले दिनों में विश्व शांति का रास्ता बनने वाला है। लेखराज कृपलानी जी ने आत्मा-परमात्मा और सृष्टि चक्र का जो ज्ञान प्राप्त किया है उसी को ब्रह्मा कहा गया। उसी के प्रचार के लिए ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना की गई। आज मुझे इस बात का विशेष आनंद है कि वर्षों से हम भारत के लोग मां के अंदर देवी का वास देखते हैं। इस संस्था में वर्षों से उसको चलाने में मातृ शक्ति का अहम रोल रहा है। वह हम सबके लिए गौरव और अभिमान का विषय है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन- व्यक्ति बदलता है तो ही विश्व को बदलने का कारण बन सकता है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन थीम पर कई प्रकार के सद विचार ब्रह्माकुमारीज़ ने भारत सहित विश्व के अलग-अलग देशों में पहुंचाए। ब्रह्मचर्य का पालन, शाकाहार, नशामुक्ति, सादगीपूर्ण जीवन, राजयोग ध्यान और इसके माध्यम से आत्मा का परमात्मा से मिलन और आत्म ज्ञान की प्राप्ति से शुद्ध, शांत और अमर आत्मा के अंश की अनुभूति करना। इन सारी चीजों को ब्रह्माकुमारीज़ ने बहुत सरल तरीके से दुनिया के 140 देशों तक पहुंचाने का कार्य किया है।

गृहमंत्री ने किया संस्थान की वार्षिक थीम का शुभारंभ

ब्रह्माकुमारीज़ पर बोले शाह-

मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में आया हूं। मैंने बहुत सुना था कि ब्रह्माकुमारीज़ योग और ध्यान के माध्यम से पूरे विश्व में मानव के अंदर शांति और साधना का एक दीप प्रज्जवलित करने का कार्य कर रही है। जब मैं इस संस्थान में आया न मैंने कुछ सुना था, न कुछ किया था परंतु मन को अखाड़ शांति का अनुभव यहां आकर हुआ है। संस्था अनेक वर्षों से हर व्यक्ति के अंदर पड़ी हुई सद् बुद्धि को जागरूक करने का जो प्रयास हो रहा है, इसी के तपोबल से एक अद्भुत शांति का वातावरण इस परिसर में महसूस किया है।

झलकियां

- गृहमंत्री का अतिरिक्त महासचिव डॉ. मृत्युंजय भाई ने इलाइची की माला और राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। सोमनाथ मंदिर की प्रतिकृति का मॉडल भेंट किया।
- अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई व बीके शिविका बहन ने मधुबन का मॉडल प्रतीक चिंह्न भेंट किया।
- मधुर वाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।
- सुरक्षा सेवा प्रभाग की 40 साल की सेवाओं का वीडियो प्रजेंटेशन दिखाया गया। इसमें अब तक की गई सेवाओं को दिखाया गया।

आंतरिक स्थिरता का आज समाज पर असर दिख रहा है

गृह मंत्री शाह ने कहा कि संस्था की अब तक चली सभी गतिविधियों ने ध्यान, साधना, मानसिक शांति, आंतरिक स्थिरता और सद्मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति को उत्तेजन देने की सभी प्रवृत्ति के लिए मैं पूज्य लेखराज कृपलानी जी को बहुत आदर सहित प्रणाम करके उनको श्रद्धांजली देना चाहता हूं। समाज के अंदर व्यक्तिगत जीवन में जब गुरु मिल जाता है तो कई लोगों का जीवन सन्मार्ग पर प्रशस्त होने का उदाहरण है। मगर कुछ लोग इस प्रकार का काम करके जाते हैं जो हर व्यक्ति के आत्मा को ही एक दीप बनाकर प्रकाशमय मार्ग पर चलने के लिए लेखराज कृपलानी जी ने ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना करके हर एक व्यक्ति की आत्मा को दीप बनाकर उसके प्रकाश में आगे बढ़ने का एक बहुत बड़ा आह्वान किया है, जिसका आज समाज पर बहुत बड़ा असर दिख रहा है।

संस्था की वार्षिक थीम का उद्घाटन

शाह ने कहा कि मैं आज यहां आया हूं तब दीदी रनतमोहिनी जी को मन पूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करना चाहता हूं। राजयोगिनी मोहिनी दीदी को भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ ने तपस्या और तेज से दुनियाभर में सादगी, संयम और सहयोग का अद्भुत वातावरण खड़ा किया है। ब्रह्माकुमारीज़ की वर्ष 2025-26 की थीम- विश्व एकता और विश्व विश्वास हेतु ध्यान और सुरक्षा कर्मियों के लिए आत्म जागृति से राष्ट्र सशक्तिकरण सम्मेलन का यहां उद्घाटन हो रहा है।

सेना से लेकर खेल तक हर क्षेत्र में योग को शामिल किया जा रहा है: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि पूज्य राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को भी श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए नमन करता हूं जो अब हमारे बीच नहीं हैं। उनका जीवन त्याग, प्रेम, सेवा, साधना और आध्यात्मिक अनुशासन की अनूठी मिसाल रहा है। संस्थान की इस वर्ष की थीम मौजूदा सामाजिक, राजनीतिक, वैश्विक परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक है। शांति और सद्भाव की यह तपोभूमि आंतरिक जागृति के माध्यम से हमारे बहादुर जवानों के आत्म सशक्तिकरण के माध्यम से और भी प्रभावी बनाएगी। इन जवानों को ध्यान और योग से शारीरिक और मानसिक शक्ति मिलेगी। जब हम भीतर से शांत होते हैं तो दुनिया पर भी सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। सेना से लेकर खेल तक हर क्षेत्र में योग को शामिल किया जा रहा है। गृह मंत्री शाह के पहुंचने पर मानपुर हवाई पट्टी पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, राज्य मंत्री ओटाराम देवासी, प्रभारी मंत्री केके विश्नोई ने अगवानी की। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि यदि अपने ही मन में शांति नहीं है तो हम कितनी ही कॉन्फ्रेंस कर लें, शांति की बात कर लें लेकिन कोई फायदा नहीं होगा। सबसे पहले हमें स्वयं के अंदर शांति लानी होगी। राजयोग मेडिटेशन से हमें मानसिक शांति प्राप्त होती है। मेडिटेशन से मन-बुद्धि-संस्कार की एकाग्रता आती है। अतिरिक्त महासचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, सुरक्षा सेवा प्रभाग की उपाध्यक्षा दिल्ली की बीके शुक्ला दीदी ने भी संबोधित किया।

ज्ञान सरोवर में मीडियाकर्मियों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

'वैश्विक शांति और सद्भाव के अग्रदूत के रूप में मीडिया की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है'

वर्तमान विश्व के परिदृश्य को दृष्टिगत रखते हुए मीडियाकर्मियों को निरंतर सकारात्मक दिशा में अहम योगदान देने की जरूरत है। समाज में सकारात्मक कार्य कर रहे लोगों और कार्यों को मीडिया बढ़ावा देगा तो इससे लोगों को अच्छा करने की प्रेरणा मिलेगी। उनका जीवन और समाज के प्रति सकारात्मक नजरिया बनेगा।

- राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं के मन को परमात्म शक्तियों की ऊर्जा से भरपूर करने के बाद ही वैश्विक शांति व सद्भाव के बीज बोए जा सकते हैं। जिसके लिए अपनी दिनचर्या में कुछ समय राजयोग का अभ्यास करना चाहिए। इससे मीडियाकर्मियों का जीवन खुशनुमा और आनंदमय बनेगा।

- डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

मीडिया प्रभाग द्वारा वर्ष में दो बार राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन आयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य यही है कि मीडियाकर्मियों का जीवन आध्यात्मिक, मूल्यनिष्ठ हो। मीडिया बंधु काम के दबाव के चलते खुद पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। ऐसे में यदि उनके जीवन में आध्यात्मिकता और मेडिटेशन के समावेश से तनावमुक्त रहकर अपनी सेवा दे सकेंगे।

- बीके करुणा भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

जर्रे-जर्रे पर अशांति व भय के माहौल के बीच मीडिया की शक्ति ही शांति व सद्भाव को बल प्रदान कर सकती है। आतंकवाद के खिलाफ सारा भारत एक है। ऐसा कोई कार्य नहीं होना चाहिए जो सृष्टि की शांति के खिलाफ जाता हो। इस पवित्र स्थान से लाभ लेकर जीवन को संस्कारवान बनाना चाहिए।

- डॉ. गोपाल शर्मा, विधायक, जयपुर, राजस्थान

आत्मा के सत्य को जाने बिना प्रगति संभव नहीं है। पत्रकारिता की पूरी यात्रा सवालों की यात्रा है। स्वयं का सुधार करने की परंपरा को बल देने की जरूरत है। असहमति को अपना सौंदर्य नहीं बनाना चाहिए। शांति का संदेश देना भारत की नियति है। मीडिया को समावेशी, विविधता में एकता बनाए रखने वाले मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

- प्रो. डॉ. संजय द्विवेदी, जेएमएस विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल, मप्र

नैतिकता हमारे चरित्र व व्यवहार का एक हिस्सा है। जो हमारे वास्तविक संस्कारों में है। बिना किसी पक्षपात व दबाव के सच को सकारात्मक तरीके से प्रकाशित करना ही मीडियाकर्मियों का दायित्व है। **- प्रो. डॉ. ऊर्वशी परमार, माखनलाल विश्वविद्यालय, भोपाल, मप्र**

देशभर से 400 से अधिक पत्रकारों-संपादकों ने लिया भाग

शिव आमंत्रण, माउंट आबू।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के ज्ञान सरोवर परिसर में मीडिया प्रभाग द्वारा पांच दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से 400 से अधिक प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो और बेव मीडिया से जुड़े पत्रकार, संपादक, मीडिया शिक्षकों ने भाग लिया। वैश्विक शांति और सद्भाव के अग्रदूत के रूप में मीडिया की भूमिका विषय पर अलग-अलग सत्रों में वक्ताओं ने विचार रखे। साथ ही सुबह 4 बजे से सभी ध्यान में रमे नजर आए। महासम्मेलन के उद्घाटन में राजस्थान के उद्योग व खेल विभाग राज्य मंत्री और सिरोही जिला प्रभारी केके विश्नोई ने शिरकत की तो समापन पर केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी ने भाग लिया।

मंत्री बोले- समाज को नई दिशा देने में मीडिया का विशेष योगदान है

शुभारंभ पर उद्योग व खेल विभाग राज्य मंत्री, जिला प्रभारी मंत्री केके विश्नोई ने कहा कि विश्व शांति, जलवायु, पर्यावरण संरक्षण समेत कई प्रकार की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के साथ उनका समाधान करने में मीडिया हमेशा आगे रहा है। समाज को नई दिशा देने में मीडिया का विशेष योगदान है। विकट परिस्थितियों में मीडियाकर्मी अपनी जान की परवाह किए बिना दायित्वों को पूरे मनोयोग से निभाने में अग्रसर रहते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था मानव जीवन की सर्वोच्चता का अभिप्राय है जिसने विश्व के हृदय में आत्म चेतना का प्रकाश फैलाने का पुनीत कार्य किया है। आत्म चिंतन करने का प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराना महान कार्य है। जिसके लिए मीडिया ने हमेशा पहल की है। आने वाले समय में मीडियाकर्मियों के सकारात्मक व संगठित प्रयासों से भारत विश्व गुरु के रूप में सबके सामने होगा। जिसके लिए ब्रह्माकुमारी संगठन के साथ समाज के हर वर्ग को मिलकर दृढ़तापूर्वक इस पुनीत कार्य में अपना योगदान देना चाहिए।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार-

संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी, ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी प्रभा दीदी, विज्ञान व तकनीकी प्रभाग के अध्यक्ष मोहन सिंहल, प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश, पीआरओ बीके कोमल, दिल्ली से आए एक्सक्यूटिव चीफ एडीटर विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके शान्तनु, बीके निकुंज, बीके सुशांत, बीके सरला बहन, मुख्यालय संयोजक बीके चंदा बहन, समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार, जयपुर की क्षेत्रीय संयोजिका बीके चंद्रकला बहन, डॉ. बीके रीना, नोएडा से आए बिजनेस स्टेंडर्ड न्यूज एडिटर आशुतोष ओझा, भोपाल से आई एक न्यूज चैनल की डायरेक्टर व एडिटर शेफाली गुप्ता, दिल्ली के जनभावना एडिटर डॉ. विवेक गौतम, सोनीपत डीआईपीआरओ राकेश गौतम, आदि ने भी विचार व्यक्त किए। शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके शीलू बहन ने राजयोग का अभ्यास कराते हुए गहन शांति की अनुभूति कराई।

इन विषयों पर हुई विस्तृत चर्चा

- तनावमुक्त जीवनशैली, सर्वोच्च सता की पहचान
- मीडिया में बदलाव की चुनौतियों का सामना करना
- आध्यात्मिक सशक्तिकरण समय की पुकार
- सोशल मीडिया में कृत्रिम बुद्धिमता के उपयोग से लाभ और खतरे
- पेशेवरों को सशक्त बनाने में मीडिया की भूमिका
- राजयोग ध्यान की तकनीक
- शांति व सदभाव के लिए आध्यात्मिक प्रज्ञा की कार्ययोजना,जीवन में सफलता के लिए कर्म दर्शन।

श्रेष्ठ चरित्र व आचरण भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विरासत हैं। जिनके संरक्षण को लेकर मीडिया को गंभीर होने की जरूरत है। मीडियाकर्मियों को आत्मा की आवाज सुनकर समाज को सही दिशा देने के अभियान में ईमानदारी से सहयोग करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज द्वारा पुरातन भारतीय सनातन संस्कृति की खुशबू समूचे विश्व में पहुंचाई जा रही है।

- मंजू शर्मा, लोकसभा सांसद, जयपुर, राजस्थान

तेजी से बदलती मीडिया तकनीक के साथ स्व मूल्यांकन, नैतिकता, जवाबदेही का संतुलन बनाए रखने के लिए ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से मूल्यों को लेकर गंभीरतापूर्वक दिया जा रहा प्रशिक्षण ही समाज, देश व विश्व को एकता के सूत्र में पिरोने का सामर्थ्य रखता है।

- प्रो. डॉ. गोविंद सिंह, मीडिया सलाहकार मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

मीडियाकर्मी को समाज के विभिन्न वर्गों की नैतिकता का संतुलन रखते हुए जवाबदेही तय करनी होती है। मीडिया का बदलता स्वरूप आने वाली पीढ़ी के लिए चुनौतियां भरा है, जिसमें नैतिक मूल्यों से सशक्त मीडियाकर्मी ही समाज को सकारात्मक दिशा देने में समर्थ होगा।

- उमानाथ सिंह, न्यूज संपादक, प्रसार भारती, डीडी

मूल्यों को अमल में लाने के लिए हर मीडियाकर्मी को राजयोग का अभ्यास करना चाहिए। भारत की सोच हमेशा से ही शांतिप्रिय रही है। शिव परमात्मा के माध्यम ब्रह्मा बाबा ने संसार में शांति का संदेश दिया है।

- प्रो. डॉ. मान सिंह परमार, पूर्व कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे विवि

ब्रह्माकुमारीज मीडिया को एकत्रित कर शान्ति स्थापना का कार्य कर रहा है

समापन सत्र में केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि मीडिया की कठिनाइयों को संज्ञान में लाकर केंद्र में चर्चा करने के बाद उन्हें दूर करने की हर संभव कोशिश की जाएगी। ब्रह्माकुमारी संगठन देशभर की मीडिया को एकत्रित कर विश्व में शान्ति स्थापना करने का कार्य कर रहा है जिसके लिए संस्था साधुवाद की पात्र है। जो समाज के हर वर्ग को एक साथ लेकर वसुधैव कुटुम्बकम की वास्तविक भावनाओं को परिलक्षित कर रही है। मीडिया कर्तव्यों का बोध कराने में हमेशा अग्रसर रहता है। मेडिटेशन आत्मा को परमात्मा से मिलाने का सशक्त माध्यम है।

समाजसेवा प्रभाग और सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के बीच तीन साल के लिए एमओयू साइन

देशभर में चलाएंगे एजिंग विद डिग्निटी प्रोग्राम

देशव्यापी प्रोग्राम का राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने किया उद्घाटन

शिव आमंत्रण, राष्ट्रपति भवन, दिल्ली।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के समाजसेवा प्रभाग और सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के बीच तीन साल के लिए एमओयू साइन किया गया है। इसके तहत समाजसेवा प्रभाग द्वारा देशभर के वृद्धाश्रम, आरडब्ल्यूए में वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण के लिए पहल सम्मान के साथ वृद्धावस्था (एजिंग विद डिग्निटी प्रोग्राम) कार्यक्रम चलाया जाएगा। इस देशव्यापी प्रोग्राम का उद्घाटन राष्ट्रपति भवन के सांस्कृतिक केंद्र में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने किया। एमओयू के तहत सभा, सम्मेलन, आध्यात्मिक सत्र, मेडिटेशन सत्र के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के जीवन में आनंद और खुशहाली लाने का प्रयास किया जाएगा।
राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि माता-पिता और बड़ों का सम्मान करना हमारी संस्कृति में है। आमतौर पर परिवारों में यह देखा जाता है कि बच्चे दादा-दादी के साथ बहुत खुश रहते हैं। घर के बड़े परिवार के लिए भावनात्मक स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। जब बुजुर्ग अपने परिवार को फलता-फूलता देखते हैं तो उनका शरीर और मन स्वस्थ रहता है।

सारपूर्ण जीवन जीने का चरण है वृद्धावस्था

राष्ट्रपति ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धा वाले और भागदौड़ भरे जीवन में हमारी युवा पीढ़ी के लिए वरिष्ठ नागरिकों का साथ, प्रेरणा और मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके पास अनुभवों और ज्ञान का भंडार है, जो युवा पीढ़ी को जटिल चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सकता है। वृद्धावस्था आध्यात्मिक रूप से खुद को सशक्त बनाने, अपने जीवन और कार्यों का विश्लेषण करने और सारपूर्ण जीवन जीने का चरण भी है।
राष्ट्रपति ने कहा कि आध्यात्मिक रूप से सशक्त हमारे वरिष्ठ नागरिक देश और समाज को अधिक समृद्धि और प्रगति की ओर ले जा सकते हैं। वरिष्ठ नागरिक अतीत से जुड़ने की कड़ी हैं और भविष्य के मार्गदर्शक भी हैं। एक राष्ट्र के रूप में यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम सुनिश्चित करें कि हमारे वरिष्ठ नागरिक, वृद्धावस्था का समय सम्मान और सक्रियता के साथ बिताएं। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार, राज्य मंत्री रामदास अठावले, राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।
ये भी रहे मौजूद: इस दौरान सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के सचिव अमित यादव और ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से मैनेजमेंट कमेटी की मेंबर व ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने एमओयू पर साइन किए। इस मौके पर सुप्रसिद्ध प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी सहित समाजसेवा प्रभाग के पदाधिकारीगण मौजूद रहे।

ऐसे चलाएंगे एजिंग विद डिग्निटी प्रोग्राम

एजिंग विद डिग्निटी प्रोग्राम के तहत राष्ट्रीय, क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित कर वरिष्ठ नागरिकों को जोड़ा जाएगा। साथ ही उन्हें खुशनुमा जीवनशैली, आनंदमय जीवन के टिप्स दिए जाएंगे। वृद्धाश्रमों में मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, आनंददायक सेशन और एक्टीविटीज कराई जाएंगी।
एमओयू का उद्देश्य: वरिष्ठ नागरिकों को आध्यात्मिकता एवं आत्मिक उत्थान में सक्रिय रुप से सम्मिलित करने के लिए एक मंच तैयार करना। वरिष्ठ नागरिकों को उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की देखभाल के महत्व को समझाना। वानप्रस्थ की भावना को जागृत करना एवं अपने अनुभवों व ज्ञान को नई पीढ़ी को सौंपने की जिम्मेदारी का बोध कराना है।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शिक्षकों के महासम्मेलन का किया शुभारंभ

भारत आध्यात्मिक आधार पर बनेगा विश्व की महाशक्ति : प्रधान

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित शिक्षकों के महासम्मेलन के शुभारंभ पर पहलगाम में आतंकी हमलों में दिवंगत लोगों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजली अर्पित की गई। समग्र कल्याण के लिए शिक्षा विषय पर आयोजित सम्मेलन का केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शुभारंभ करते हुए कहा कि भारत एक दिन आध्यात्मिक आधार पर विश्व की महाशक्ति बनेगा। भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में लागू की गई लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ ने 88 साल पहले मूल्य शिक्षा देने के लिए पहल शुरू कर दी थी। संस्थान ने शिक्षा को अध्यात्म की पद्धति बनाई। फिजिक्स, कैमिस्टी, हिस्टी पढ़ने से मनुष्यों की दक्षता बढ़ती है, लेकिन मनुष्य तैयार नहीं होता है। अच्छा मनुष्य बनने के लिए मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा जरूरी है। जो समाज के लिए मूलभूत शिक्षा है उसकी यहां ब्रह्माकुमार भाई-बहनें आठ दशकों से प्रेक्टिस कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पाश्चात्य यदि जीवन को पटरी पर रखता तो शायद आज विश्व का पर्यावरण इतना खराब नहीं होता। भारत के सामान्य लोगों और जीवन में आध्यात्मिकता भरी पड़ी है। यहां बैठे शिक्षाविद् यदि और कोई क्षेत्र का चुनाव करते तो शायद आपका भौतिक विकास बहुत अच्छा होता लेकिन आपने समाज को परिवर्तन करने के लिए शिक्षा का क्षेत्र चुना और शिक्षक बने। बदा दें कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए देशभर से 400 से अधिक शिक्षाविद पहुंचे है।

लोगों का जीवन मूल्यों से जुड़ा हो-

उन्होंने कहा कि जब भारत आजादी की शताब्दी मना रहा होगा, वहीं ब्रह्माकुमारीज़ लोगों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से नया दिग्दर्शन देने के लिए समर्पित रूप से लगा होगा। ब्रह्माकुमारीज़ की वैल्यु एजुकेशन के प्रति प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से झलकती है। आज हम शिक्षा प्रभाग की नई इनीशिएटिव की शुरु कर रहे हैं जो आज के समय के लिए बहुत जरूरी है। लीप प्रोग्राम का उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण करना है जिनका जीवन मूल्यों से जुड़ा हो।

1937 में रखी गई संगठन की नींव

केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रधान ने कहा कि 1937 के उस दौर में अखंड भारत देश का एक तबका आजादी की लड़ाई में लगा था वहीं पूज्य ब्रह्मा बाबा ने सपना देखा कि यदि हमारा देश आजाद होगा तो उसका क्या भविष्य होगा। देश आजाद हो जाने से स्वराज मिल सकता है, स्वराज्य नहीं आ जाएगा। इसलिए उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक रुप से सशक्त बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय की नींव रखी। शिक्षा को आध्यात्मिकता से जोड़ने की पहल शुरु की।

माउंट आबू आत्म चिंतन की भूमि है

शिक्षा मंत्री प्रधान ने कहा कि मैं पिछले 25 साल से ब्रह्माकुमारीज़ को जानता हूं। मनुष्य लोभ, मोह, अहंकार में फंसा रहता है लेकिन उसी मनुष्य को भगवान बनाने का एक माध्यम चाहिए जो यह संगठन कर रहा है। आज मैं ब्रह्माकुमारीज़ के इस पवित्र अनुष्ठान में आया हूं। मैं बाबा के इस विचार के प्रति, उनकी तपस्या के प्रति नमन करता हूं। माउंट आबू सदियों से आत्म चिंतन और आध्यात्मिक शिक्षा का पावन स्थान रहा है। यहां ऋषि-मुनि और साधकों ने गहराई से साधना करके सिद्धी प्राप्त की है।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार

- अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि राजयोग शिक्षा को अपनाकर आज लाखों लोगों का जीवन पूरी तरह बदल गया है। राजयोग के अभ्यास से मन शक्तिशाली बन जाता है।
- अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम से जिससे समाज और देश में बदलाव आएगा। विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा से जोड़ने के लिए शिक्षा प्रभाग द्वारा मूल्य शिक्षा की शुरुआत की गई है।
- उदयपुर के महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय एवं प्रौद्योगिकी कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक कि अध्यात्म से ही व्यक्ति का संपूर्ण विकास होता है। आज यह सभी के लिए बहुत जरुरी है।
- केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति श्रीनिवास वाराखेड़ी ने कहा कि मूल्य शिक्षा के बिना भौतिक शिक्षा अधूरी है। जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने भी विचार व्यक्त किए।

दादी को अर्पित की श्रद्धांजली

इस दौरान शिक्षा मंत्री ने पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके कार्यों को याद किया। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। अतिथि का इलायची माला, शॉल, बैज, पगड़ी और स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया गया। हैदराबाद की बीके अंजलि ने स्वागत भाषण दिया। मूल्य शिक्षा कार्यक्रम के निदेशक डॉ. बी.के. पंडियामणि, मूल्य शिक्षा की अतिरिक्त निदेशक बीके लीना मूल्य शिक्षा के बारे में बताया। प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके शीलू दीदी, कार्यकारी सदस्य बी.के. सुप्रिया ने भी संबोधित किया। संचालन राष्ट्रीय संयोजिका बीके सुमन दीदी ने किया।

संपादकीय

आत्मा और परमात्मा का मिलन कराता है राजयोग

21 जून को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस न केवल भारत की योग परंपरा की वैश्विक स्वीकृति है, बल्कि यह मानवता के लिए आत्म-जागृति और आंतरिक शांति की एक पुकार भी है। योग का वास्तविक अर्थ है जुड़ाव। यह केवल शरीर को लचीला बनाने या तनाव को कम करने की विधि नहीं, बल्कि आत्मा को उसकी मूल शांति, पवित्रता और शक्ति से पुनः जोड़ने की प्रक्रिया है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान योग की इसी आध्यात्मिक परिभाषा को अपनाता है। राजयोग, जो आत्मा और परमात्मा के बीच प्रेम और ज्ञान का पवित्र संबंध है। इस योग में शरीर की क्रियाओं से अधिक, मन की एकाग्रता और विचारों की शुद्धता का महत्व है। राजयोग सिखाता है कि हम आत्मा हैं। नश्वर शरीर नहीं, बल्कि चेतन, शाश्वत और दिव्य सत्ता। जब आत्मा परमात्मा से जुड़ती है, तब सच्चा योग होता है। एक ऐसा अनुभव जो जीवन में शांति, शक्ति और स्पष्टता भर देता है। आज, जब विश्व अशांति, चिंता और असंतुलन से जूझ रहा है, तब राजयोग जैसे आध्यात्मिक साधन की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दशकों से विश्वभर में लाखों लोगों को राजयोग के माध्यम से आत्म-परिवर्तन और विश्व-परिवर्तन का संदेश दे रहा है।
इस योग दिवस पर, आइए केवल योगाभ्यास तक सीमित न रहें। राजयोग के माध्यम से स्वयं से जुड़ें, परमात्मा को स्मरण करें और अपने जीवन को दिव्यता, करुणा और सकारात्मकता से भर दें। यही सच्चे योग की शुरुआत है जो न केवल हमें बदलता है, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को भी नई दिशा देता है।

बोध कथा/जीवन की सीख

एक चुप सौ सुख

एक मछलीमार कांटा डाले तालाब के किनारे बैठा था। काफी समय बाद भी कोई मछली कांटे में नहीं फंसी, न ही कोई हलचल हुई तो वह सोचने लगा कहीं ऐसा तो नहीं कि मैंने कांटा गलत जगह डाला है, यहां कोई मछली ही न हो। उसने तालाब में झांका तो देखा कि उसके कांटे के आसपास तो बहुत-सी मछलियां थीं। उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि इतनी मछलियां होने के बाद भी कोई मछली फंसी क्यों नहीं! एक राहगीर ने जब यह नजारा देखा तो उससे कहा-'लगता है भैया, यहां पर मछली मारने बहुत दिनों

बाद आए हो! अब इस तालाब की मछलियां कांटे में नहीं फंसती।
मछलीमार ने हैरत से पूछा-'क्यों, ऐसा क्या है यहां?
राहगीर बोला-'पिछले दिनों तालाब के किनारे एक बहुत बड़े संत ठहरे थे। उन्होंने यहां मौन की महत्ता पर प्रवचन दिया था। उनकी वाणी में इतना तेज था कि जब वे प्रवचन देते तो सारी मछलियां भी बड़े ध्यान से सुनतीं। यह उनके प्रवचनों का ही असर है कि उसके बाद जब भी कोई इन्हें फंसाने के लिए कांटा डालकर बैठता है तो ये मौन धारण कर लेती हैं। जब मछली मुंह खोलेगी ही नहीं तो कांटे में फंसेगी कैसे? इसलिए बेहतर यही होगा कि आप कहीं और जाकर कांटा डालो।
परमात्मा ने हर इंसान को दो आंख, दो कान, दो नासिका, हर इंन्द्रीय दो- दो प्रदान किया है। पर जिह्वा एक ही दी, क्या कारण रहा होगा ? क्योंकि यह एक ही अनेकों भयंकर परिस्थितियां पैदा करने के लिए पर्याप्त है। संत ने कितनी सही बात कही कि जब मुंह खोलोगे ही नहीं तो फंसोगे कैसे? अगर इन्द्रीय पर संयम करना चाहते हैं तो इस जिह्वा पर नियंत्रण कर लेवें। बाकी सब इन्द्रियां स्वयं नियंत्रित रहेंगी। यह बात हमें भी अपने जीवन में उतार लेनी चाहिए। कई बार व्यक्ति के अनुचित या व्यर्थ बोल से बनते काम भी बिगड़ जाते हैं। जीवनभर के लिए रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो जाती है। उसका समाज में यश गिर जाता है। वर्तमान में देखें तो बहुत सी समस्याएं का कारण ज्यादा बोलना या अनुचित बोलना ही है।

संदेश: परमात्मा कहते हैं कि कम बोलो, धीरे बोले, मीठा बोलो। हमारी मीठी वाणी से बिगड़ते काम बन जाते हैं। लोगों की दुआओं के पात्र बन जाते हैं। वाणी से हमारे व्यक्तित्व की पहचान होती है। जिस व्यक्ति का व्यक्तित्व जितना गंभीर, गहराईपूर्ण, गुणों से भरपूर होता है उसकी वाणी में उतनी ही विनम्रता होती है। विनम्रता पूर्वक व्यवहार हमारे चरित्र को ऊंच बनाता है। समाज में सम्मान दिलाता है। कई बार न बोलना भी उचित रहता है।

मेरी कलम से

संसार में एक परमात्मा ही सत्य है

महेश कुमार,
सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर, मंडीदीप, भोपाल, मप्र

3 अक्टूबर 2024 की बात है। मैं खेत पर था। मैं नंगे पैर था और ट्यूबवेल की मोटर चालू करने के लिए जैसे ही बढ़ा तो जोरदार करंट लग गया। करंट लगने से वहीं जमीन पर गिर पड़ा। कुछ देर बाद मुझे एक आवाज आई ऐसा लगा कि कोई फरिश्ता पुकार रहा है कि पलट जाओ। तब मुझे महसूस हो रहा था कि अब नहीं बचूंगा। शरीर निढाल हो गया था। परमात्मा का चमत्कार है कि मैं उस जगह से कुछ कदम दूर कैसे पहुंचा, कुछ नहीं मालूम। फिर होश आया और साथियों को सूचना दी। उस दिन लगा कि जीवन में कुछ नहीं है। एक परमात्मा ही सत्य है। इस घटना के बाद 4 अक्टूबर 2024 को पूर्व निर्धारित योजना अनुसार जगन्नाथ पुरी जाने के लिए रिजर्वेशन था। शरीर में हिम्मत नहीं थी तो कैंसिल करने का सोचा। इस पर मां ने कहा कि बेटा ईश्वर के आशीर्वाद से नया जीवन मिला है इसलिए जरूर जाओ। इस पर मैं यात्रा पर गया और सफलतापूर्वक पूरी कर घर आ गया।
इसके 15 दिन बाद 18 अक्टूबर 2018 को पहली बार माउंट आबू आया। पहले ही मैंने सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स कर लिया था। यहां आकर महसूस हुआ कि ब्रह्माकुमारीज़ में जो आत्मा-परमात्मा का ज्ञान दिया जा रहा है, वह सत्य है। इससे इंसान का जीवन बदल जाता है। यहां से जाने के बाद मैंने संकल्प कर लिया और तब से नियमित रूप से ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे उठकर राजयोग मेडिटेशन करता हूं। अब तो राजयोग जैसे जिंदगी का हिस्सा बन गया है। दिनभर परमात्मा की याद के गीत सुनता हूं और गीता विशेषज्ञ राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी की क्लासेस सुनता हूं। मैंने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर अपनी एक साल की यात्रा में अनुभव किया है कि राजयोग दुनिया का सबसे महान, दिव्य और सर्वोत्तम योग है। इससे मेरी विचारधारा बदल गई है। पहले शरीर में दर्द रहता था। बीमार हो जाता था लेकिन राजयोग के अभ्यास से शरीर का सारा दर्द दूर हो गया है। जीवन सरल हो गया है और आनंद ले रहा हूं। एक साल पहले तक मेरी भगवान से मांगने की प्रवृत्ति थी, लेकिन अब परमात्मा शिव बाबा से कभी भी कुछ नहीं मांगता हूं। जीवन में जो पाना था सब पा लिया। हम तो उसके बच्चे हैं और पिता से कुछ मांगने की जरूरत नहीं पड़ती है। वह अपने आप सारी आवश्यकताएं पूरी करते जाते हैं।
यदि खुद को समझना है, जानना है और इस सृष्टि का रहस्य जानना है तो राजयोग मेडिटेशन कोर्स को गहराई से समझना होगा। ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की वाणी और व्यक्तित्व में एक अलग ही आकर्षण और दिव्यता महसूस की है। इसका कारण राजयोग ही है। राजयोग इंद्रियों को शीतल बनाकर शांत कर देता है। अब बची हुई सांसों को अधिक से अधिक प्रभु पिता की सेवा में अर्पित करने का संकल्प है। दूसरों की मदद करना, सहयोग करना, दुआएं कमाना ही जीवन की सबसे बड़ी दौलत है। एक साल से नियमित रूप से परमात्मा के महावाक्य मुरली क्लास सुनता हूं। रोज सुबह-शाम योग करता हूं।
मेरा आप सभी पाठक भाई-बहनों से यही आग्रह और संदेश है कि एक बार अवश्य अपने नजदीकी ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर जाकर राजयोग मेडिटेशन का कोर्स अवश्य करें। राजयोग को अपने जीवन का हिस्सा बनाकर देखें। आपका जीवन बदल जाएगा। शिव बाबा की अनुभूति कर पाएंगे।

योग द्वारा कर्तव्यनिष्ठ अवस्था की ओर प्रस्थान

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 83

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशतनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आबूरोड। जीवन के उत्कर्ष का लक्ष्य लेकर चलना और श्रेष्ठ चिंतन की व्यवस्था से चित्त को निर्मल करते हुए कर्म के व्यावहारिक स्वरूप तक पहुंच जाना सार्थकता की दिशा में अग्रसर होने का स्पष्ट लक्षण होता है। योग द्वारा कर्तव्यनिष्ठ अवस्था की ओर प्रस्थान करने से पूर्व सार्थक प्रयास एवं परिणाम के बीच सह सम्बन्ध स्थापित करने की पुरजोर कोशिश करनी चाहिए जिससे साधक एवं साध्य के मध्य एकाकार भाव की परिणिति का यथोचित रूप से सदुपयोग किया जा सके।

प्रबल पुरुषार्थ का श्रेष्ठ संकल्पः मानवीय चिंतन की उत्कृष्टता का जीवंत प्रमाण कर्मगत स्थितियों के प्रति गहरी निष्ठा से जुड़ा होता है। व्यक्तिगत जीवन की वर्तमान अवस्था का मूल्यांकन उस समय आसान हो जाता है जब कर्तव्यपरायणता की मनःस्थिति निर्मित हो जाती है। एक पथिक की गतिशीलता का आशय उसके प्रस्थान बिंदु से गंतव्य तक लगाया जाता है जबकि वह यात्रा की अनुभूतियों को उपलब्धि की दृष्टि से महत्व प्रदान करता है । पुरातन काल से साधक और साध्य की पवित्रता को समाज में विशिष्ट दर्जा प्राप्त रहा है जो आज भी सम्मान का घोतक है। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त लक्षण को जीवन में समाहित करना प्रथमतः अनिवार्य आवश्यकता होती है । समाज के विभिन्न आयामों में स्वयं की उपस्थिति प्रबल पुरुषार्थ के व्यावहारिक स्वरुप द्वारा सुनिश्चित की जा सकती है । कर्तव्यनिष्ठ स्थिति के निर्माण की चाहत लगभग सभी व्यक्तियों में होती है लेकिन इस सकारात्मक दिशा की ओर कदम बढ़ाने का साहस कुछ ही व्यक्तियों में दिखाई पड़ता है । कर्मक्षेत्र के अंतर्गत प्रविष्ठ हो जाना और अपनी अवस्था को एकाग्रता से संबद्ध कर देना वास्तविक रूप से समर्पण का पर्याय होता है। जब साधक और साध्य के मध्य एकाकार भाव उत्पन्न हो जाता है तब यह स्वीकार कर लिया जाता है कि कर्तव्यनिष्ठ अवस्था विकसित हो गयी है ।

विशुद्ध चिंतन की पवित्र स्मृतिः कर्तव्य के मार्ग पर गतिशीलता का अर्थ है कि व्यक्ति के द्वारा स्वयं के विकास का मानदंड किसी न किसी रूप में निर्धारित कर लिया गया है । सामान्यतः यह देखा गया है कि जो लोग जीवन में कुछ विशिष्ट करना चाहते हैं , सर्वप्रथम वो अपना लक्ष्य बनाते हैं और उसके पश्चात उस निश्चित दिशा में अग्रसर होते हैं । जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक उपयुक्त विचार की आवश्यकता होती है जिसके सहारे व्यक्ति एक सुनिश्चित स्थान पर पहुँचने का प्रयास करता है । कई बार एकांगी विचारधारा से निर्णय शक्ति प्रभावित होती है और व्यक्ति को यह आभास हो जाता है कि जो कुछ उसके द्वारा सोचा अथवा समझा जा रहा है वह पूर्णतया सही है जबकि हकीकत में ऐसा नहीं होता है । स्वयं की समझ शक्ति के द्वारा जो कुछ निर्धारित किया जाता है वह एक निश्चित अवस्था तक उपयुक्त हो सकता है लेकिन इसके पश्चात् उसमें अनिवार्य संशोधन की गुंजाईश होती है। विभिन्न परिस्थितियों के अंतर्गत अपनी निर्धारण शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन व्यक्ति के माध्यम से अलग-अलग तरीके से किया जाता है। यदि व्यक्ति के द्वारा उत्पन्न विरोधाभासी स्थिति को छिपाते हुए किसी विचार तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है तब वास्तविक मूल्यांकन के समय परिणाम कुछ और निकल जाते हैं । जब व्यक्ति के आन्तरिक विचार स्पष्ट नहीं होते हैं तब किसी लक्ष्य निर्धारण से जुड़े मसले पर कार्य करना कठिन हो जाता है और अंततः उलझने की स्थिति में आकर खड़ा होने के लिए बाध्य हो जाता है।

उर्ध्वगामी स्थिति का यथार्थ बोध

व्यक्तिगत जीवन में लगभग सभी लोगों की आंतरिक चाहत यह होती है कि किसी भी परिस्थिति के अंतर्गत उनकी मनः स्थिति उर्ध्वगामी बनी रहे । विकास की दृष्टि से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि गुणात्मक पक्षधरता के लिए ऊंचाई की ओर अग्रसर होना सबसे अहम शर्त होती है । यदि किसी कारण से विरोधाभासी परिस्थितियों के दबाव ने निराशा एवं अवसाद की स्थिति जीवन के परिवेश में निर्मित कर दी है उसके बावजूद भी व्यक्तिगत धारणा अधोगामी स्थिति को स्वीकार नहीं करती है । व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि -व्यक्ति का मन , अंततः स्वयं को समझाने में सफल हो जाने की ओर है जिसमें उसके द्वारा उर्ध्वगामी स्थिति के प्रति पूर्ण निष्ठा अभिव्यक्त की जाती है । विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययन उर्ध्वगामी स्थिति के बारे में खुलासा करते हुए बताते हैं कि व्यक्ति चाहे कितनी भी विषम स्थिति एवं नकारात्मक मनोभावों से गुजर रहा हो उसके ज़ेहन में सदा ही विचारगत शुद्धि के लिये छटपटाहट बनी रहती है । कर्तव्यनिष्ठ अवस्था का विश्लेषण करते समय यह पता चल जाता है कि व्यक्ति के द्वारा सर्वप्रथम स्वयं को समझने के लिए प्रयास किए गए उसके पश्चात् कर्म की निःस्वार्थ प्रवृति का अध्ययन करते हुए कर्तव्य हेतु समर्पण की स्थिति निर्मित हो सकी ।

"ध्यान (योग) से ही हम इंद्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते हैं।"

स्वामी विवेकानंद, युगपुरुष

"जब तक मन में काम की भावना, गुस्सा, अहंकार, और लालच भरे हुए होते हैं. तब तक एक ज्ञानी व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति में कोई अंतर नहीं होता है।"

गोस्वामी तुलसीदास, संत, कवि

अध्यात्म सबसे ऊपर है, शांति जीवन का सार है: केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय शांतिवन पहुंचे। जहां सबसे पहले पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के समाधि स्थल पर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। साथ ही दादी के मेडिटेशन रूम में पहुंचे नमन कर श्रद्धांजली दी।

इस दौरान चर्चा में मंत्री चौधरी ने कहा कि अध्यात्म सबसे ऊपर है। शांति सबसे बड़ी चीज है। मैं ब्रह्माकुमारीज को वर्षों से जानता हूं। संस्था द्वारा पूरे विश्व में सराहनीय सेवाएं की जा रही हैं। 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समाज के कल्याण में जुटी हुई हैं। खासकर संस्था नशामुक्ति के

क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय सेवाएं कर रही है। आज युवा पीढ़ी को नशे के चंगुल से बचाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। यदि हमें देश का भविष्य बचाना है तो युवाओं को नशे से दूर रखना होगा।

दादी की निज सचिव रहीं बीके लीला दीदी ने केंद्रीय मंत्री चौधरी का परमात्मा का स्मृति चिंह देकर सम्मानित किया। बीके तारा दीदी ने संस्थान की सेवाओं के बारे में बताया। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, नगर पालिका अध्यक्ष मगनदान चारण, बीके दिलीप भाई, बीके ईश्वर भाई सहित आबू रोड के भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे। इसके बाद आप माउंट आबू के लिए रवाना हो गए जहां मीडिया सम्मेलन में भाग लिया।

अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक व अध्यक्ष टीम के साथ पहुंचे शांतिवन

दादी ने आदर्श जीवन और शिक्षाओं से लाखों लोगों को नई दिशा दी: तोगड़िया

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक व अध्यक्ष डॉ. प्रवीण तोगड़िया टीम के साथ ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय शांतिवन पहुंचे। इस दौरान सभी ने राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के स्मृति स्तंभ पर पहुंचकर श्रद्धांजली अर्पित की। अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक व अध्यक्ष (कैंसर सर्जन) डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने कहा कि दादी रतनमोहिनी जी का जीवन आध्यात्मिक ऊर्जा से संपन्न लाखों लोगों के लिए योग की मिसाल था। दादी ने अपने तपस्यामय जीवन, आदर्श, मूल्यों और शिक्षाओं से लाखों लोगों को जीवन में नई दिशा दी है। लाखों युवाओं को नई राह दिखाए है। दादी का जाना आध्यात्मिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। हम सभी सदा आपकी दी हुई शिक्षाओं को याद रखेंगे। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया। दादी की निज सचिव बीके लीला दीदी ने टीम के सभी सदस्यों का परमात्मा का स्मृति चिंह देकर सम्मान किया। पीआरओ बीके कोमल ने संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में बताया। अंतरराष्ट्रीय बजरंग दल के केंद्रीय अध्यक्ष मनोज सिंह ने कहा कि यहां आकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। दादी को श्रद्धांजली अर्पित करने का अवसर मिला है। इस मौके पर अंतरराष्ट्रीय बजरंग दल के संयुक्त महामंत्री इंद्रजीत सिंह राजगुरु, अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के संयुक्त महामंत्री प्रदीप गौर, जोधपुर प्रांत मंत्री पीराराम चौहान, जयपुर प्रांत अध्यक्ष सीताराम, महाराष्ट्र कोंकण प्रांत के बाला भारद्वाज सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

कैबिनेट मंत्री बाबू लाल खराड़ी ने दादी को दी श्रद्धांजली

दादी का योगमय जीवन और शिक्षाएं मार्गदर्शन करती रहेंगी: मंत्री खराड़ी

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के तेरहवें पर शांतिवन के डायमंड हाल में श्रद्धांजली सभा आयोजित की गई। इसमें राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रीय विकास एवं गृह रक्षा विभाग कैबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा कि दादी का जीवन लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का मिसाल रहा। दादी ने अपना संपूर्ण जीवन लोगों की भलाई के लिए लगा दिया। उनका योगमय, तपस्वी जीवन और शिक्षाएं सदा हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी। इस दौरान सभी वरिष्ठ भाई-बहनों ने दादी के स्मृति स्तंभ पर पहुंचकर

श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दादी की निज सचिव बीके लीला दीदी ने कहा कि दादी ने अपने जीवन से जो महान पद चिंह छोड़े हैं यदि हम उन पर चलकर दादी की शिक्षाओं को आत्म सात करेंगे तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

विधानसभा के मुख्य सचेतक ने दादी को दी श्रद्धांजली

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

मुख्यालय शांतिवन में राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग पहुंचे। उन्होंने पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के स्मृतिस्थल पर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। दादी की निज सचिव रहीं राजयोगिनी बीके लीला दीदी से मुलाकात कर दादी द्वारा विश्व कल्याण के लिए किए गए कार्यों, त्याग-तप और सेवा की सराहना की। साथ ही दादी मेडिटेशन रुम में कुछ देर ध्यान कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

गर्ग ने कहा कि दादी ने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। आपका तपस्यामय जीवन सदा लोगों के लिए प्रेरित और मार्गदर्शन करता रहेगा। उन्होंने सोलार से

चलने वाला किचन भी देखा और बोले यहां हजारों लोगों का भोजन सोलार से बनता है यह अपने आप में अनोखा है। राष्ट्रीय कवि संगम के अध्यक्ष जगदीश सिंह मित्तल भी मौजूद रहा। पीआरओ बीके कोमल ने संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में बताया।

विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में सेमीनार आयोजित: वैज्ञानिक, इंजीनियर और आर्किटेक्ट विंग के तहत आयोजन

वर्ष में कम से कम एक पेड़ लगाने का कराया संकल्प

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के आनंद सरोवर परिसर में विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में वैज्ञानिक, इंजीनियर और आर्किटेक्ट विंग द्वारा सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें नई दिल्ली के भारतीय नौसेना के पूर्व वाइस एडमिरल सतीश कुमार घोरमड़े ने कहा कि यदि हमें पृथ्वी को बचाना है, पर्यावरण को बचाना है तो मिलजुलकर पेड़ लगाना होंगे। आज सभी संकल्प करें कि वर्ष में कम से कम एक पेड़ जरूर लगाएंगे। साथ ही उसकी रक्षा भी करेंगे।

इस दौरान सभी को संकल्प कराया कि मैं यथासंभव अधिक से अधिक पेड़ लगाऊंगा और उनका पोषण करूंगा। अपने जन्मदिन पर कम से कम 1 पेड़ लगाऊंगा। मैं सिंगल यूज प्लास्टिक से परहेज करूंगा और यदि आवश्यक हो तो बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक का उपयोग करूंगा। मैं धरती माता की सुरक्षा के लिए सादा जीवन और शाकाहारी सात्विक आहार अपनाऊंगा।

एसईए विंग के अध्यक्ष राजयोगी बीके मोहन सिंघल कहा कि धरती हमारी मां है, उसकी सुरक्षा हमारा परम कर्तव्य है और इस धरती पर सबसे यंगेस्ट मेंबर हैं पेड़-पौधे जो धरती मां की गोद में पलते-बढ़ते हैं। उसके बाद दूसरे नंबर पर यंगेस्ट मेंबर हैं, सांप-केंचुआ आदि जो रेंगते रेंगते धरती पर चलते हैं। तीसरे यंगेस्ट मेंबर हैं चार पैर वाले जानवर जैसे एक बच्चा थोड़ा सा बड़ा होता है तो अपने घुटनों के बल दो हाथ दो पैर से चलता। सबसे बड़ा सदस्य हैं मनुष्य तो उसका कर्तव्य है पेड़ पौधे जीव-जंतु अन्य सभी प्रजातियों की देखभाल करना।

धरा नहीं रहेगी तो सबकुछ धरा ही रह जाएगा

मंच संचालन करते हुए बालोतरा की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अस्मिता बहन ने बताया कि धरा नहीं होगी तो सब कुछ धरा ही रह जाएगा। अतः धरती की सुरक्षा के लिए हम सभी दृढ़ संकल्प करें कि अधिक से अधिक पेड़ लगाएंगे। सिंगल यूज प्लास्टिक को अवॉइड करेंगे। बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक का ही उपयोग करेंगे। सादगीपूर्ण जीवनशैली और सात्विक शाकाहारी भोजन को अपना कर धरती मां की सुरक्षा के लिए अपना योगदान अवश्य करेंगे। नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी बीके राज दीदी और सेवानिवृत्त डीजीएम (सेल) बीके नरेश गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर 500 से अधिक लोग मौजूद रहे।

तीन दिवसीय मैजिक ऑफ मेडिटेशन कार्यक्रम

ब्रह्माकुमारीज़ का मूल आधार श्रेष्ठ मूल्य हैं

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय मैजिक ऑफ मेडिटेशन कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें 400 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की। अलवर सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी ममता दीदी ने कहा कि मानवीय जीवन का महत्व तभी है जब उसमें मूल्य समाहित हों। संस्था का मूल आधार श्रेष्ठ मूल्य हैं। संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने कभी भी मूल्यों से समझौता नहीं किया। ब्रह्मा बाबा के जीवन में सदा त्याग, तपस्या और सेवा का बल निहित रहा। जो भी उन्हें मिलता उसे अपनापन नजर आता। सभी को उनमें एक अलौकिक पिता की छवि दिखाई देती थी। जीबी पंत हॉस्पिटल से आए न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वप्न गुप्ता ने कहा कि राजयोग मन को शक्तिशाली बनाता है। राजयोग मेडिटेशन शारीरिक और मानसिक प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। जीवन में दुखों का कारण प्रकृति के किसी न किसी नियम का उल्लंघन करना है। मन की कमजोरी ही नियम तोड़ने के लिए विवश करती है।

इंदौर, मप्र। न्यू पलासिया, मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड में तनाव मुक्त कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें प्रेरक वक्ता बीके नारायण भाई और सारिका बहन ने खुश रहने के मंत्र बताते हुए राजयोग का महत्व बताया। इस मौके पर एचआर मैनेजर मुकेश सहित कंपनी का स्टाफ मौजूद रहा।

'माइंड स्पा' एक्सपेरिमेंट मेडिटेशन सत्र आयोजित

मुलुंड, मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नीलगिरी क्लब हाउस, वसंत ऑस्कर में माइंड स्पा - एक्सपेरिमेंट मेडिटेशन सत्र आयोजित किया गया। इसमें राजयोगिनी डॉ. बीके गोदावरी दीदी ने मानसिक विश्रांति, भावनात्मक उत्थान एवं आंतरिक स्पष्टता पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में 60 से अधिक प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बीके सविता बहन ने संस्थान का परिचय दिया।

सकारात्मक जीवनशैली अपनाकर नशे से मुक्ति पाने के उपाय बताए

सोनीपत, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज शिव कॉलोनी सेवाकेंद्र द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत दिल्ली विद्यापीठ और सब्जी मंडी में कार्यक्रम आयोजित किया गया। दोनों में ब्रह्माकुमारी बहनों ने विद्यार्थियों और लोगों को नशे के प्रकार, उससे होने वाले मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक दुष्परिणामों की जानकारी दी। साथ ही ध्यान व सकारात्मक जीवनशैली अपनाकर नशे से मुक्ति पाने के व्यावहारिक उपाय बताए। अंत में सभी ने जीवनभर नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। इसके अलावा सेवाकेंद्र द्वारा क्षेत्र में नशामुक्त भारत अभियान के तहत समय प्रति समय कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

स्नेह मिलन में हरियाणा के मुख्यमंत्री पहुंचे हिसार सेवाकेंद्र

शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा। बालसमंद रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज पीस पैलेस सेवाकेंद्र पर स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान हेतु किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की। उन्होंने विशेष रूप से संस्था के अनुशासन, मूल्यनिष्ठ और जनकल्याण की भावना की प्रशंसा करते हुए ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउंट आबू आने की इच्छा भी व्यक्त की। हिसार सेवाकेंद्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी रमेश बहन एवं ब्रह्माकुमारी अनीता बहन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। इस मौके पर कैबिनेट मंत्री रणवीर गंगवा, नलवा से विधायक रणधीर पनिहार, हांसी विधायक विनोद भयाना, हिसार के मेयर प्रवीण पोपली, जिला बीजेपी अध्यक्ष आशा खेदड़ सहित अन्य नेता मौजूद रहे। ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी रमेश बहन ने सभी को राजयोग ध्यान के महत्व से अवगत कराया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में जानकारी दी।

देशभर में जारी है नशामुक्त भारत अभियान

राजकोट, गुजरात। ब्रह्माकुमारीज के पंचशील सेवाकेंद्र पर व्यसन मुक्ति रथ पहुंचने पर गुजरात जोन की निदेशिका बीके भारती दीदी, गुजरात गौ सेवा चेयरमैन डॉ. वल्लभभाई कथिरिया, भाजपा नेता मुकेशभाई दोषी, सामाजिक न्याय विभाग के मिलन पंडित ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

जोगुलंबा, गडवाल, तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर नशा मुक्त भारत अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर एसपीटी श्रीनिवास राव, डीएसपी मोगुलय्या, सीआई टांगुटूर श्रीनिवासुलु, ठेकेदार आयप्पा रेड्डी विशेष रूप से मौजूद रहे। संचालिका बीके मंजुला बहन ने नशे के दुष्परिणाम बताते हुए सकारात्मक जीवनशैली से नशा छोड़ने के उपाय बताए।

विराटनगर, नेपाल। ब्रह्माकुमारीज द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत दो स्कूलों में जागरूकता सत्र आयोजित किए गए। पहला सत्र सुबह शिखा दीप स्कूल और दूसरा सत्र दोपहर में वाल्मीकि बोर्डिंग स्कूल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में बच्चों को नशे के हानिकारक प्रभावों की जानकारी दी गई। साथ ही ध्यान, सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवनशैली के बारे में बताया।

सिमराही बाजार, बिहार। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। सब्जी हाट, सिमराही रोड और हटिया गली में आयोजित कार्यक्रम में लोगों को विभिन्न प्रकार के नशों के बारे में जानकारी दी गई।

कोटकपुरा, पंजाब। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत डीसीएम पब्लिक स्कूल, सदा राम बंसल स्कूल, अशोका मॉडल स्कूल और ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। विधानसभा अध्यक्ष कुलतार सिंह संधवा ने हरी झंडी दिखाकर अभियान को रवाना किया।

कॉलेज स्टूडेंट ने खेलकूद प्रतियोगिताओं में दिखाया हुनर

- मान सरोवर में शिक्षा प्रभाग का विद्यार्थी सम्मेलन सोलफुल पांडा आयोजित
- पांच दिवसीय सम्मेलन में देशभर के कॉलेज- यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी पहुंचे मान सरोवर

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित विद्यार्थी सम्मेलन सोलफुल पांडा में भाग लेने के लिए देशभर के कॉलेज और यूनिवर्सिटी के 500 से अधिक छात्र-छात्राएं पहुंचे। विद्यार्थियों को मेडिटेशन से लेकर मोटिवेशनल क्लासेस से लेकर खेलकूद की प्रतियोगिताएं कराईं गईं। तपोवन परिसर में आयोजित खेल प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया। नींबू रेस प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपना हुनर दिखाया तो लंबी कूद में छात्रों ने अपना बेहतर प्रदर्शन किया। साथ ही रस्साकस्सी, खो-खो, पुसअप चैलेंज, मिनी मैराथन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समापन पर सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिताओं के दौरान सभी छात्र-छात्राओं को अलग-अलग ग्रुप में बांटा गया था।

इस मौके पर अतिरिक्त महासचिव डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद जरूरी है। इससे संपूर्ण विकास होता है। आप सभी यहां पांच दिन तक सभी सेशन अटेंड कर ज्ञान का पूरा लाभ लें। यहां से मेडिटेशन सीखकर घर पर भी जारी रखें, इससे पढ़ाई और लक्ष्य प्राप्ति में मदद मिलेगी। शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका बहन के नेतृत्व में सभी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस दौरान ट्रांसपोर्ट विभाग से बीके मोहन भाई, युवा प्रभाग के बीके जीतू भाई, बीके सचिन भाई, बीके बुरहान भाई ने प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका निभाई।

विशाल दिव्य समर्पण एवं सम्मान समारोह आयोजित, बड़ी संख्या में लोग रहे मौजूद

मेरठ की तीन बेटियों ने अपनाया संयम पथ, विश्व कल्याण में अर्पित किया जीवन

शिव आमंत्रण, मेरठ।

अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन समाज और विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पण कर देना महान संकल्प, तप और साहस का निर्णय होता है। अध्यात्म की राह पर चलते हुए नगर की तीन बेटियां शिवप्रिया बनेंगी। हजारों लोगों की मौजूदगी में परमात्मा शिव को अपना जीवन साथी स्वीकार करेंगी। इस दिव्य और भव्य आयोजन के हजारों लोग साक्षी बनेंगे।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रभु मिलन भवन सेवाकेंद्र द्वारा विशाल दिव्य समर्पण एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें तीन बेटियां संयम के पथ पर चलते हुए समाज सेवा, समाज कल्याण और विश्व सेवा में अपना जीवन अर्पित किया। यह बेटियां आजीवन ब्रह्मचर्य के व्रत का पालन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के साथ जुड़कर सेवाकार्यों को बढ़ाएंगी।

कार्यक्रम में आशीर्वचन देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी और रशिया सेवाकेंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी पधारीं।

मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के ऊर्जा राज्य मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर और अतिथि के रूप में मेरठ केंट विधायक अमित अग्रवाल, विधायक धर्मेंद्र भारद्वाज, मेयर हरिकांत अहलुवलिया,

सीसीएसयू की कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला, वरिष्ठ भाजपा नेता कमल दत्त शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष गौरव चौधरी समारोह में विशेष रूप से मौजूद रहे।

माता-पिता ने लाड़लियों का हाथ दीदी के हाथों में सौपा

समर्पण समारोह में इन बेटियों के माता-पिता ने अपनी-अपनी लाड़लियों का हाथ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी सुदेश दीदी, राजयोगिनी चक्रधारी दीदी के हाथों में सौंपा। मन-वचन-कर्म से संपूर्ण समर्पण के साथ ईश्वरीय नियमों का पालन करते हुए सेवाएं प्रदान करेंगी। ब्रह्माकुमारीज से जुड़ने की शुरुआत राजयोग मेडिटेशन के सात दिवसीय कोर्स से होती है। जो संस्थान के देश-विदेश में स्थित सेवाकेंद्रों पर निःशुल्क सिखाया जाता है। राजयोग ध्यान ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षा का मुख्य आधार है। राजयोग की शिक्षा ही संस्था का मूल आधार और उद्देश्य है। संस्थान का मुख्य नारा है- स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। हम बदलेंगे, जग बदलेगा। नैतिक मूल्यों की पुरुत्थान और भारत की पुरातन स्वर्णिम संस्कृति की स्थापना करना।

- उत्तर प्रदेश सरकार के ऊर्जा राज्य मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर रहे मौजूद
- माउंट आबू से पधारीं संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने दिया आशीर्वचन

सच्चाई-सफाई और सादगी की मिसाल था ईशु दादी का जीवनः बीके मुन्नी दीदी

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका ईशु दादी की चतुर्थ पुण्य तिथि शुभ भावना दिवस के रूप में मनाई

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका ईशु दादी की चतुर्थ पुण्य तिथि शांतिवन मुख्यालय सहित देशभर में शुभ भावना दिवस के रूप में मनाई गई। वरिष्ठ भाई-बहनों ने पुष्पांजली अर्पित कर उनके द्वारा विश्व कल्याण में किए गए कार्यों को याद किया। बता दें कि 6 मई 2021 को ईशु दादी का देवलोकगमन हो गया था। आपकी लगन और ईमानदारी को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने शुरू से ही आपको हिसाब-किताब रखने की सेवा में लगाया। आपने दादी प्रकाशमणि के साथ कदम से कदम मिलाकर वर्षों तक ब्रह्माकुमारीज़ के आर्थिक लेन-देन की जिम्मेदारी संभाली।

कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित पुष्पांजली कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आधार स्तंभ सदस्यों में से ईशु दादी एक थीं। उनका जीवन सादगी की मिसाल रहा। उनके जीवन में सच्चाई-सफाई और सादगी थी। वह गंभीरता की मूरत थीं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने ईशु दादी के साथ के अनुभव सुनाते हुए कहा कि आज जो ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में देश-विदेश में परमात्मा के महावाक्य सुनाए जाते हैं उन्हें नोट करती थीं। पहले ब्रह्मा बाबा महावाक्य उच्चारण करते थे और दादी शार्ट हैंड में उन्हें लिखती थीं। ईशु दादी की निज सचिव रहीं बीके कविता दीदी ने बताया कि दादी के साथ वर्षों तक रहने का सौभाग्य मिला। दादी के कभी भी अपने निजी शौक के लिए पैसे खर्च नहीं किए। आप नियम-मर्यादाओं में अडिग रहती थीं। आपके जीवन से बहुत कुछ सीखा है। दादी का एक-एक कर्म प्रेरक और अनुकरणीय रहा। अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई, इंजीनियरिंग प्रभाग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता दीदी, बीके गोकुल भाई, ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

विधि रोज मुरली से मिलती है, विधान हमें खुद बनाने हैं

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

निश्चय से विजय कितनी होती आ रही है, यह भी पक्का नियम है। निश्चय से कभी हिले नहीं हैं, अनुभव वाला निश्चय है। कोई हिला नहीं सकता, कोई संशय की बात कर नहीं सकता। अपने को इस नियम के बंधन में रखा है। मैं ईश्वरीय संतान हूं, ईश्वरीय फैमिली है, सत धर्म के स्थापना के अर्थ हैं। हम असत्यता को खत्म करने वाले, सत्यता को प्रदान करने वाले हैं। नियम बनाए किसने- ज्ञान, विवेक और अनुभव ने। ज्ञान सिर्फ बुद्धि को चलाने वाला नहीं, लेकिन विवेक और अनुभव क्या कहता है। तो यह प्राप्ति फट से शुरू होती है- शान्त, सरल, खुश हैं तो अपने लिए सफलता है। अन्दर की शान्ति जैसे बाबा कूट-कूट कर भर रहा है। आत्मा को शान्त स्वरूप रहने का संस्कार फिर से इमर्ज हो जाए, तब तक बाबा अपनी सकाश दे करके आत्मा में भर रहा है। इस तरह से हम नियम की पालना करें।

▪ अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख दिन-प्रतिदिन भाग्य की रेखा लंबी खींचते चलो

नियम बनाए ज्ञान, विवेक और अनुभव से। फिर उसी अनुसार चले तो फायदा ही फायदा है। नियम को थोड़ा सा भंग किया, उसी अनुसार नहीं चले तो विघ्न आ जाते हैं। फिर विघ्नों को हटाने की मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन विघ्नों का आह्वान हमने किया। कितने भी विघ्न आयें लेकिन समझो इसमें कल्याण समाया हुआ है, हमारी शुभ भावना से यह हट जाएगा। शुभ भावना नहीं होगी तो कड़ा रूप धारण करता रहेगा। शुभ भावना से हट जाएगा, यज्ञ में विघ्न शुरू से आए हैं, लेकिन अन्दर कल्याण समाया हुआ है, अन्दर से देखा है, कल्याण हमारा हुआ है। सेवा छोड़ी नहीं है, सेवा बढ़ाई है। विघ्न आना उसका काम है, भगाना हमारा काम है। इतना अन्दर निश्चय का बल है। विधि रोज मुरली से मिलती है, विधान खुद अपने लिए बनाने हैं। उसमें अपने को ढीला नहीं रखना है। अच्छा।

वाह ड्रामा! वाह बाबा! तो कितना परिवर्तन आ जाता है...

बाबा के मीठे बोल अति प्यारे लगते हैं क्योंकि हमारे जीवन को परिवर्तन करने में शक्ति देने वाले बोल हैं। बाबा की मुरली सुनते सदा अपने आपको देखो - मैं कौन हूं? वाह रे मैं! वाह ड्रामा! वाह बाबा! तो कितना परिवर्तन आ जाता है। वाह रे मैं माना अभिमान चला गया, सर्व आत्माओं में से बाबा ने हमको श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा बना लिया। इसलिए कहते हैं - वाह रे मैं! अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख दिन-प्रतिदिन भाग्य की रेखा बड़ी लम्बी खींचते चलो। जितना चाहे खींच लो। भाग्यविधाता बाबा है इसलिए इजी हो गया है क्योंकि उसके बच्चे हैं! सीख जाते हैं उनसे कैसे भाग्य बनाएं इसलिए ब्रह्मा बाबा को भागीरथ कहते हैं। भक्तिमार्ग में भागीरथ की बहुत मान्यता है। तो ड्रामानुसार यह भी हमारा भाग्य है कि बाप के मस्तक पर बैठ हम ज्ञान गंगा बनें हैं। बाबा कहां से उठाकर कहां बिठाता है। जिस बाप का बच्चे से बहुत प्यार होता है या जो बच्चा बहुत लाड़ला होता है तो उस बच्चे को कंधे पर उठा लेते हैं। यहां तो बाबा हम सबको सिर पर उठाकर सिर का ताज बना देता है। तो हम बाप के सिर का ताज हो गए, तब ही तो हम बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

रियल लाइफ प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

जब रूस के प्रधानमंत्री को भेजा पत्र

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

एक तार रूस के प्रधानमन्त्री बुल्गानिन को तथा ख़ुश्चेव को भी दी गई जब वे भारत में राष्ट्रपति भवन में आकर ठहरे थे और साउदी अरेबिया के राजा को तार भेजी गई थी। उसमें लिखा था - आबू के दिलवाड़ा मन्दिर को न देखना गोया विश्व की सबसे अधिक अद्भुत चीज़ को देखने से चूकना है। हम आपको आमन्त्रित करते हैं कि तीस करोड़ रुपये की लागत से बना हुआ यह मन्दिर जोकि ताजमहल से भी अच्छा है, अवश्य देखिये। इसमें ब्रह्मा की प्रतिमा भी है। यह धर्म सम्पूर्ण पवित्रता पर आधारित था और योग-बल द्वारा स्थापित किया गया था। अब विश्व शान्ति के स्थापक त्रिमूर्ति परमात्मा शिव अवतरित होकर फिर से वह कार्य कर रहे हैं। परन्तु उन द्वारा उत्तर मिला कि अभी समयाभाव होने के कारण हमारा आना मुश्किल है।

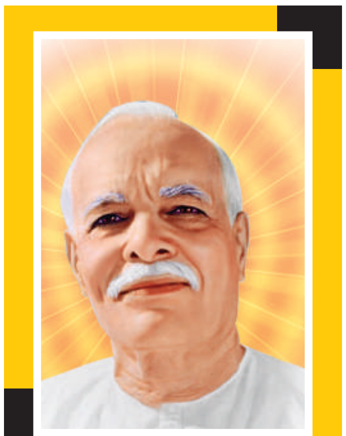

मेले में टेलिविजन पर ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन का सारांश...

परमपिता परमात्मा की प्रिय सन्तान! हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ब्रह्माकुमारियां आपको ज्ञानसागर परमात्मा का ज्ञान सुनाते हैं। वे ब्रह्मामुख से कहते हैं मैं सर्वव्यापी नहीं, बल्कि परमधाम का रहने वाला हूँ। मेरा रूप ज्योति बिन्दु है और मैं पुनः सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना तथा आसुरी सृष्टि के विनाश का कार्य क्रमशः प्रजापिता ब्रह्मा तथा महादेव शंकर द्वारा करवा रहा हूं। श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के सुख-शान्ति सम्पन्न राज्य के वही अधिकारी बनेंगे जो मुझ पतित-पावन, ज्ञान सागर परमात्मा की श्रीमत का पालन करेंगे अर्थात् 'पवित्र और योगी' बनेंगे।

▪ 1955 में अन्तरर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेले से लाखों लोगों को मिला संदेश

कल्प-वृक्ष और सृष्टि चक्र के चित्र जो आपको यहां दिखाए गए हैं, विश्व का सतयुग से लेकर कलियुग तक का इतिहास बताते हैं और ये हमने दिव्य साक्षात्कार के आधार पर ही बनाए हैं।

सतयुग में यही भारत स्वर्ग (वैकुण्ठ) था जबकि श्रीलक्ष्मी, श्रीनारायण का अटल, अखण्ड, निर्विघ्न राज्य था। आज यही भारत नरक अर्थात् दुःखी, कंगाल व मोहताज हो गया है। उस समय एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा व एक मत थी जबकि अब अनेक धर्म, अनेक राज्य, अनेक भाषाएँ व मत-मतान्तर हो गये हैं जिस कारण लड़ाई-झगड़ा व कलह सर्वत्र है! अब परमात्मा पुनः दैवी धर्म व सतयुग के राज्य की स्थापना कर रहे हैं। अतः इसी जीवन में अतीन्द्रिय सुख-शान्ति और भविष्य में डबल ताजधारी देवी- देवता पद प्राप्त करने के लिये हम आपको हार्दिक निमन्त्रण देते हैं कि हमारे किसी भी सेवाकेन्द्र पर पधार कर लाभ उठावें।

1955 में टेलीविजन पर दिया ईश्वरीय ज्ञान-

दिसम्बर 1955 में देहली में एक अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेला हुआ था। वह देहली में अपनी श्रेणी की एक पहली प्रदर्शनी थी, जोकि इतनी विशाल थी। उसमें एक टेलिविजन स्टूडियो था। उसमें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रतिनिधि को भी भाषण करने तथा कल्प-वृक्ष के चित्र की व्याख्या करने का कई बार अवसर मिला था। उस प्रदर्शनी को लाखों लोगों ने देखा था। बहुत लोगों को टेलीविजन पर कल्प-वृक्ष का दिव्य चित्र देखने तथा उसकी व्याख्या सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ क्योंकि उस अति विशाल प्रदर्शनी अथवा मेले में, जोकि कई एकड़ भूमि में फैला था, कई स्थानों पर टेलिविजन स्क्रीन लगी हुई थीं। उस मेले में हज़ारों की संख्या में कल्प-वृक्ष के चित्र और उस भाषण की प्रतियाँ बाँटी गईं। मेले में एक स्टॉल में दिव्य चित्रों की प्रदर्शनी सजाई गई थी। अनुभवी बहनें और ज्ञान-युक्त भाई दर्शकों को मौखिक रूप से उन चित्रों की व्याख्या देते थे। लोगों के समूह उन्हें देखने और समझने आते थे। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का वह पहला लघु प्रयोग था। क्रमशः

अव्यक्त इशारे राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

दिल का संबंध होगा तो होगी परमात्मा की अनुभूति

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हम सब कहते हैं कि बाबा आप हमारे साथ हो, तो बाबा के साथ का अनुभव होता है? बाबा साथ है तो हम चाहे जितने भी कमज़ोर हैं लेकिन हमारा साथी सर्वशक्तिवान है। सर्वशक्तिवान के साथ की शक्ति कमज़ोर में भी आ जाती है। जैसे साथ में कोई बहुत ताकत वाला होशियार होता है तो दिल में यह पक्का होता है कि मेरे साथ जो है वह बहुत होशियार ताकत वाला है। साथ की हिम्मत आ जाती है, डर नहीं रहता। ऐसे ही बाबा कहते हैं अगर आपको यह निश्चय है, अनुभव करते हैं कि बाबा मेरे साथ है तो फिर जो भी बातें सामने आती हैं, चाहे व्यक्ति द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, वैभव द्वारा, उसमें हमको साथ का बल निर्भय बना देता है। यह चेक करना है कि हम कहते तो हैं बाबा हमारे साथ है। बाबा ने कहा है कि दो बांहों वाले का साथ याद रहता है लेकिन हज़ार भुजा वाला बाबा क्यों भूल जाता है! साकार में अगर कोई बहादुर हमारे साथ होता तो हम निर्भय हो जाते और हज़ार भुजाओं वाला बाबा हमारे साथ है तो फिर हम घबराएं क्यों! साथ का अनुभव तो कई करते हैं लेकिन कहते हैं मदद का अनुभव नहीं होता है। मदद का अनुभव क्यों नहीं होता? बाबा साकार में तो है नहीं।

सूक्ष्म का अनुभव सूक्ष्म में ही होगा

ब्रह्मा बाबा भी अव्यक्त रूप में है, शिवबाबा तो है ही निराकार । तो वह अव्यक्त व निराकार सूक्ष्म रूप में है। सूक्ष्म रूप का अनुभव अगर हम सूक्ष्म रूप से करें, मन-बुद्धि सूक्ष्म हैं, हाथ पांव या कर्मेन्द्रियाँ दिखाई देती हैं, उनको जैसे चाहें घुमाते हैं। मोटी चीज़ हैं। लेकिन शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों ही सूक्ष्म हैं तो सूक्ष्म का अनुभव जब तक हम सूक्ष्म द्वारा नहीं करेंगे तब तक नहीं होगा। सूक्ष्म मन और बुद्धि हमारी क्लीयर होनी चाहिए। जैसे कोई भी चीज़ अगर क्लीयर नहीं है, कुछ मैल लगी है या कुछ ढका हुआ है, बीच में कुछ आ गया तो वह चीज़ काम नहीं करेगी। मन-बुद्धि द्वारा शिवबाबा के साथ बहुत गहरा संबंध चाहिए। ऐसे नहीं वह परमात्मा सर्वशक्तिवान है, सबसे ऊंचा है, यह दिमाग के रूप में नहीं जानना, लेकिन मन-बुद्धि से दिल का संबंध पहले जुटा हुआ हो। अगर मन-बुद्धि द्वारा शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा से गहरा संबंध नहीं है, दूर का संबंध है, तो साथ का अनुभव नहीं होगा। पहले यह सोचें कि बाबा के साथ का अनुभव करने के लिए दिल का, मन-बुद्धि का पहले ज़िगरी संबंध है। जैसे स्थूल में कोई भी संबंध हमारा बहुत समीप का है, प्यार का है तो कहां भी होंगे, मन द्वारा एक सेकंड में वहां पहुंच जाएंगे। जैसे कोई की मां है, छोटा बच्चा है, वह अमेरिका में है और मां लंदन में है। लेकिन मां का संबंध प्यार का गहरा है। तो एक सेकंड में उसके पास पहुंच जाएंगे। इसी रीति से अगर बाबा के साथ का अनुभव करना है तो पहले यह क्वेश्चन उठता है कि मैंने नालेज के आधार से बाबा को जाना है या दिल के अति स्नेह के संबंध से माना है?

▪ चेक करें कि नॉलेज के आधार से बाबा को जाना है या दिल के अति स्नेह के संबंध से माना है?

बाबा हमें सर्व संबंध से मदद कर सकता है

कहने में तो आता है बाबा मेरा सब कुछ है, माता भी है, बंधु भी है, बच्चा भी है... लेकिन अगर दिल के समीप का संबंध है तो जैसे स्थूल में बात आती तो उस समय जो सहयोग दे सकता है, वह याद आएगा। यह मेरा साथी बनकर समस्या का हल कर सकता है। इसी रीति से अगर हमारे दिल के स्नेह का संबंध बाबा से है तो कैसी भी परिस्थिति हो बड़ी हो, छोटी हो कामकाज की हो या शरीर की हो, किसी भी प्रकार की कठिन बात सामने आए तो बाबा ही याद आएगा, क्योंकि वही हमारा सबकुछ है। लौकिक संबंध में तो कोई फिर भी यथाशक्ति मदद कर सकता है, लेकिन सर्वशक्तिवान बाबा हमको सर्व रूप से, सर्व संबंध से मदद कर सकता है।

जनप्रतिनिधि, पुलिस, विद्यार्थियों को दिया संदेश

छत्रपती संभाजीनगर। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा से बीके शीला दीदी, बीके डॉ. दीपक हरके और बीके कुसुम दीदी ने मुलाकात कर स्मृति चिंह भेंट किया।

सारनाथ, वाराणसी (उ.प्र.)। नवनियुक्त मण्डलायुक्त एस. राजलिंगम को ईश्वरीय उपहार प्रदान करते हुए बीके राधिका बहन, बीके तापोशी बहन व बीके विपिन भाई। इस दौरान मंडलायुक्त को संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में भी बताया।

बैतूल, मप्र। ब्रह्माकुमारीज के भाग्य विधाता भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी ने शिविर का शुभारंभ किया। इस दौरान 30 यूनिट रक्त एकत्रित किया है।

बेतिया, बिहार। गीता ज्ञान द्वारा तनावमुक्त जीवन जीने की कला पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आचार्य अरुण शास्त्री, पूर्व चनपटिया विधायक प्रकाश राय, डॉ. सुधा भारती, जबलपुर से आईं वक्ता डॉ. पुष्पा पांडे, मेयर गरिमा देवी सिकारिया, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अंजना दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

जम्मू। बनतलाब सेवाकेंद्र द्वारा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के रिहैबिलिटेशन हॉस्पिटल में स्ट्रेस मैनेजमेंट प्रोग्राम आयोजित किया गया। प्रभारी बीके कुसुम दीदी ने खुशनुमा जीवन के टिप्स बताए। सीआरपीएफ के आईजी आरडी गिरी व जवानों ने भाग लिया।

छतरपुर, मप्र। डब्ल्यूपीएल 2025 में दिल्ली कैपिटल के खिलाफ शानदार गेंदबाजी कर यूपी वॉरियर्स को जीत दिलाने वाली छतरपुर की उभरती क्रिकेटर क्रांति गौड़ का सेवाकेंद्र प्रभारी शैलजा बहन द्वारा स्वागत और सम्मान किया गया।

दिल्ली, लोधी रोड। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर संगोष्ठी आयोजित की गई। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गिरिजा दीदी और प्रेरक वक्ता बीके पीयूष भाई ने राजयोग मेडिटेशन और खुशनुमा जीवन के टिप्स बताए। इसमें एम्स की प्रो. डॉ. सुषमा सागर भी मौजूद रहीं।

दुर्ग, बघेरा (छग)। ब्रह्माकुमारीज के आनंद सरोवर सेवाकेंद्र पर नव निर्वाचित जन प्रतिनिधियों सरपंच, जनपद सदस्य और जनपद अध्यक्ष का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विधायक ललित चन्द्राकर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष पवन शर्मा, जनपद उपाध्यक्ष प्रीति देवांगन, सेवाकेन्द्र संचालिका रीटा बहन व रूपाली बहन मौजूद रहे।

पीस न्यूज,अलीराजपुर ,1 मई,आज के युग में मेडिटेशन की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि चारों ओर वातावरण में नकारात्मक ऊर्जा व्याप्त है। नकारात्मक ऊर्जा मनुष्य की सकारात्मक ऊर्जा को सोख लेती है। तभी व्यक्ति दिन के ढलने तक

अंबाला, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के दयालबाग सेवाकेंद्र पर वार्षिक थीम वैश्विक एकता एवं विश्वास हेतु ध्यान' की लांचिंग करते नगर परिषद प्रधान स्वर्ण कौर, अंबाला कैंट सबजोन की प्रभारी बीके आशा दीदी व अन्य अतिथियों ने की।

दिल्ली। नवनिर्वाचित महापौर राजा इकबाल सिंह का ब्रह्माकुमारीज के किंग्सवे कैंप सेवाकेंद्र पर आगमन हुआ। इस दौरान आरडब्ल्यूए फेडरेशन अध्यक्ष अजय बुद्धिराजा, यूबॉन कंपनी के बिजनेस ओनर ओमप्रकाश अरोड़ा, आरएसएस के प्रमुख प्रचारक गुलशन नारंग, बीके साधना दीदी ने उपस्थित रहे।

पतरातू, रामगढ़। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र द्वारा सीआईएसएफ कैम्पस और बिजली कंपनी के हॉस्पिटल में तनावमुक्त जीवन शैली विशेष पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। माउंट आबू से आए बीके प्रकाश, बीके रामदेव, बीके नवीन ने संबोधित किया।

बाणेर (पुणे)। सुप्रसिद्ध अभिनेत्री ईशा देओल से बीके डॉ. त्रिवेणी बहन, बीके डॉ. सुवर्णा बहन और बीके डॉ. दीपक हरके ने मुलाकात कर संस्था की गतिविधियों से अवगत कराया। साथ ही परमात्मा का स्मृति चिंह भेंट किया।

इंदौर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज के प्रेमनगर क्षेत्र में स्थित लालबाग पैलेस के ग्राउंड में स्वदेशी भारतवर्ष फाउंडेशन द्वारा स्वदेशी जागरण मंच के अंतर्गत स्वदेशी मेले का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी से बीके अनीता दीदी, बीके शशी दीदी एवं बीके उषा दीदी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

भिलाई, छग। ब्रह्माकुमारीज के सेक्टर 7 स्थित राजयोग भवन में डिवाइन ग्रुप की साप्ताहिक कक्षा में सभी बच्चों को पौधे वितरित किए गए। इसमें बच्चों को राजयोग मेडिटेशन और नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

आत्मिक स्थिति में रहेंगे तो लाइफ इजी रहेगी : विधायक

रायपुर। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में रूहानी सिंधी सम्मेलन आयोजित किया गया। स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के निर्माण में सिंधी समुदाय की भूमिका विषय पर सिंधी समाज के संतों के अलावा अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखें। उल्हासनगर मुंबई की निदेशिका बीके पुष्पा दीदी ने कहा कि सिंधी समाज की विशेषता व्यापार, श्रम, सेवाभाव, दान पुण्य है। आंतरिक शक्ति को बढ़ाने के लिए आध्यात्मिकता को बढ़ाना होगा। जबलपुर विधायक अशोक रोहाणी ने कहा माउंट आबू व ब्रह्माकुमारीज़ के भिन्न-भिन्न स्थानों पर नेता व अभिनेता आते हैं तो बोलते हैं आपके यहां दादियों व दीदियों का चेहरा चमकता रहता है। यहां जो आध्यात्मिकता सिखाई जाती है उससे चेहरे में रूहानियत बढ़ती जाती है। मैं सबसे आग्रह करता हूं एक बार माउंट अवश्य जाएं परमात्मा अनुभूति अवश्य करें। समारोह में हेमा दीदी, आशा दीदी, सविता दीदी संत युधिष्ठिर लाल,परमानंद परमहंस, जयपुर से आए वरिष्ठ पत्रकार राजेश असनानी ने अपने विचार रखें। इस मौके पर बड़ी संख्या में सिंधी समुदाय के भाई-बहनें उपस्थित रहे।

समालखा के स्कूलों में विद्यार्थियों को कराया नशे से दूर रहने का संकल्प

समालखा, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत तीन विद्यालयों में ध्यान व जागरूकता सत्र आयोजित किए गए। इसमें 577 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पीएमश्री जीएसएस स्कूल, गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल समालखा और तीसरा गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, करहंस में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बच्चों को नशे के विभिन्न प्रकार और दुष्परिणाम के बारे में बताया गया। ध्यान व स्वस्थ जीवनशैली के फायदे बताते हुए इसे अपनाने की सलाह दी। समापन पर सभी को नशे से दूर रहने का संकल्प कराया गया।

व्यक्तित्व विकास के टिप्स दिए

किल्ला पारडी(गुजरात)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर समर कैंप आयोजित किया गया। इसमें बच्चों को व्यक्तित्व विकास और राजयोग ध्यान के टिप्स दिए गए। इस दौरान वल्लभ आश्रम इंग्लिश स्कूल के निदेशक कौशलभाई साकारिया, जिग्नेश अहीर, बीके पारुलबेन, बीके मीनलबेन, बीके वीनु भाई मौजूद रहे।

खजुराहों में स्वास्थ्य शिविर संपन्न

खजुराहो, मप्र। ब्रह्माकुमारी सेंटर पर स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। इसमें फिजियोथैरेपिस्ट डॉक्टर प्रियंका गुप्ता, कानपुर से पधारे डॉक्टर गंगाराम भाई ने लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान बताए। भोजन में क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए के बारे में बताया। संचालन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके विद्या दीदी ने किया।

ब्रह्माकुमारी ने शांति और सद्भाव को बढ़ाया है: मेजर

शिव आमंत्रण, मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ के घाटकोपर स्थित योग भवन में भारतीय सेना के युद्ध सेवा पदक विजेता मेजर जनरल राजपाल पुनिया (ओपरेशन खुकरी फेम) पहुंचे।

इस दौरान मेजर जनरल पुनिया ने ब्रह्माकुमारीज़ के शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने सैनिकों की मानसिक दृढ़ता को बढ़ाने के लिए उनके दैनिक जीवन में आध्यात्मिक प्रथाओं को शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया। राजयोगी बीके निकुंज ने राष्ट्र के प्रति मेजर जनरल पुनिया की समर्पण और आध्यात्मिक विकास में उनकी रुचि की सराहना की। उन्होंने बताया कि कैसे मेडिटेशन और सकारात्मक सोच संतुलित और पूर्ण जीवन में योगदान कर सकते हैं। इस मौके पर घाटकोपर सबज़ोन की अतिरिक्त निदेशिका बीके विष्णु प्रिया, बिहार के डीसीपी हेमंत कुमार बारिक, फिल्म कलाकार आदर्श कुमार, डायरेक्टर रघुराज राजा भी मौजूद रहे।

सार समाचार

शिमला। शिमला राजभवन में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल से ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से बीके शकुंतला दीदी, बीके रेवादास भाई एंव बीके रमा दीदी ने मुलाकात कर संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया। साथ ही माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।

पठानकोट, पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सत्या दीदी, बीके प्रताप भाई, बीके गीता दीदी ने अपने विचार रखे और राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताया। इस मौके पर जिला प्रेस क्लब के अध्यक्ष एनपी धवन, डॉ. मनु शर्मा, भारत भूषण डोंगरा सहित प्रिंट, इलेक्ट्रानिक मीडिया के पत्रकार मौजूद रहे।

गया, बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक संजय कुमार गुप्ता, रांची की प्रभारी बीके निर्मला दीदी, गया की प्रभारी बीके शीला दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

बीदर, कर्नाटक। विश्व गुरु महात्मा बसवेश्वर जी के 892 वें पर बसव जयंती उत्सव समिति श्री बसवेश्वर देवस्थान (शिव मंदिर) गांधी गंज बीदर एवं द ग्रेन, सीड्स एंड फर्टिलाइजर एसोसिएशन गांधी गंज बीदर के संयुक्त तत्ववधान में आयोजित कार्यक्रम में बीके सुनंदा दीदी को आमंत्रित किया गया। इसमें उन्होंने सभी को परमपिता शिव परमात्मा का दिव्य संदेश दिया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन के बारे में गहराई से बताया।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

शिव आमंत्रण, पानीपत, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान मान सरोवर रिट्रीट सेंटर में बीके फाइनेंशियल प्रोफेशनल के लिए तीन दिवसीय ट्रेनिंग एवं रिट्रीट आयोजित की गई। पूरे भारत एवं नेपाल से सौ से अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट, बैंक मैनेजर्स, अकाउंटेंट एवं अकाउंट करने वाली टीचर्स ने भाग लिया। इस दौरान सर्कल इंचार्ज बीके सरला दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ मैनेजमेंट कमेटी के मेंबर बीके गोकुल भाई, बीके भारत भूषण ने अपने विचार व्यक्त किए।

योगासन हमें स्वस्थ और अनुशासित बनाता है: किरण अग्रवाल

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में आयोजित समर कैम्प में जीवन में योगासनों का महत्व विषय पर फिटनेस ट्रेनर किरण अग्रवाल ने बच्चों को जुम्बा कराने के साथ ही विभिन्न योगासनों से होने वाले लाभ से परिचित कराया।

अग्रवाल ने कहा कि योग में हम श्वांसों के आवागमन पर अपने ध्यान को केन्द्रित करते हैं। यह श्वांसों पर नियंत्रण की कला है। श्वांस लेने का भी सही तरीका मालूम होना आवश्यक है। गहरी श्वांस लेने से फेफड़ों तक ऑक्सीजन पहुंचती है, जिससे हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है। शरीर को एनर्जी मिलती है। उन्होंने बच्चों को जुम्बा कराने के बाद अलग-अलग योगासनों की जानकारी दी। उन्होंने सबसे पहले भ्रामरी प्राणायाम की खूबियाँ बतलाते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक लाभप्रद है। इससे ब्रेन के छोटे-छोटे सेल्स प्रकम्पित होते हैं। हमारा ब्रेन शार्प होता है और याददाश्त बढ़ती है। इस प्राणायाम को करने के लिए षण्मुखी मुद्रा बनाना चाहिए अर्थात कान, आँख, नाक और मुख के सातों द्वारों को उंगलियों के सहारे बन्द करके भ्रामरी प्राणायाम को करना चाहिए।

इसके बाद उन्होंने ताड़ासन का अभ्यास कराया। इसको करने के लिए दोनों पैरों के बीच एक फीट की दूरी रखें। हमारे पैर अंग्रेजी के एच पोजीशन में होने चाहिए। अब श्वांस अन्दर भरते हुए दोनों हाथों को उपर उठाएं और पंजों के बल खड़े हो जाएं। यह बुजुर्गोंके लिए भी यह अच्छा है। ऐसा करने से कभी घुटनों में दर्द नहीं होगा। इससे शरीर में मजबूती आती है। यह आसन उँचाई बढ़ाने में भी मददगार है। यह खून के प्रवाह को तेज करता है और शरीर का सन्तुलन भी बनाता है। वृक्षासन, सूर्य नमस्कार करना भी सिखलाया।

ब्रह्माकुमारीज़ के चीन सेवाकेंद्र पर पहलगाम पीड़ितों को दी श्रद्धांजली

गुआंगझोउ (चीन)। भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में पहलगाम आतंकवादी हमले के पीड़ितों को मौन रहकर श्रद्धांजली दी गई। इसमें ब्रह्माकुमारी की ओर से बीके सपना दीदी व भाई-बहनों ने भाग लिया।

नशे से दूर रहने का दिया संदेश

गुरुग्राम। ओम शांति रिट्रीट सेंटर द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत दिल्ली व गुरुग्राम के विभिन्न स्थानों पर छह जागरूकता सत्र आयोजित किए गए। इसमें 2295 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस दौरान एसडी बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जीडी गोयनका स्कूल, जीएसएस स्कूल कादिपुर, जीएसएस स्कूल, खंडसा रोड, सरकारी सीनियर स्कूल शिकोहपुर और खेडकी टोला, हल्दीराम रेस्टोरेंट के पास मैदान में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यार्थियों को सदा नशे से दूर रहने का संकल्प कराया गया।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

हिसार, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ ज्योतिपुरा मोहल्ला द्वारा नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन की 77वीं स्थापना दिवस पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। बीके अनीता दीदी ने सभी को राजयोग ध्यान द्वारा आंतरिक शांति की अनुभूति कराई। इस मौके पर जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. धर्मपाल पूनिया, डॉ. अमर ठकराल, डॉ. सुरेश जायसवाल, डॉ. अशोक यादव, डॉ. महेंद्र बंसल, डॉ. राजेन्द्र विरमानी, डॉ. सुखबीर वर्मा, डॉ. घनश्याम पचार, डॉ. देवेंद्र ग्रोवर, डॉ. सुनील, डॉ. रवि, डॉ. अनुपम मौजूद रहे।

अध्यात्म से ही आएगा बदलाव

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। नगर में चल रही श्रीमद भागवत कथा में ब्रह्माकुमारीज़ के शुभम विहार सेवाकेंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी, बीके भारती बहन ने कथावाचक का सम्मान कर माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया। साथ ही संस्थान द्वारा सामाजिक कल्याण के लिए की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया। इस दौरान कथावाचक ने ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं को सराहा और कहा कि समाज में बदलाव अध्यात्म से ही आएगा। आज लोगों तेजी से अध्यात्म की तरफ बढ़ रहे हैं।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

विश्व एकता एवं विश्वास के लिए 'राजयोग ध्यान'

आबू रोड, राजस्थान। पुरातन संस्कृति अध्यात्म और योग ही हमारी धरोहर, ताकत और विरासत है। आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्य ही भारत को विश्व समुदाय से श्रेष्ठ और महान बनाते हैं। तकनीकी प्रगति के बावजूद दुनिया आध्यात्मिकता को लेकर भारत को आशा भरी निगाहों से देख रही है। प्राचीन काल से ही भारत आध्यात्मिक ज्ञान और योग के जरिए विश्व का नेतृत्व करता रहा है। हम उस महान संस्कृति के पुरोधा, संरक्षक और पोषक हैं जहां वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव और भावना रग-रग में समाहित है। हम सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया के संकल्प में रचे-बसे और उसके पालनहार हैं। अध्यात्म और ध्यान में ही वह शक्ति है जो दुनिया को एक सूत्र में पिरो सकती है। अनेकता और विषमताओं में एकता लाना और दुनिया को एक मंच पर खड़ा करना अध्यात्म से ही संभव है। भारत ही नहीं वरन आज दुनियाभर में लोग तेजी से योग को अपना रहे हैं। अध्यात्म और योग का महत्व समझ रहे हैं। हम जीवन में कितनी ही भौतिक तरक्की कर लें लेकिन मानसिक शांति और आत्मिक आनंद अंतर्जगत की यात्रा में ही समाहित है।

हमें अंतर्रात्मा की ओर लौटना ही होगा...

वर्तमान में हम सामाजिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर बिखराव, भय और अविश्वास से जूझ रहे हैं। विश्व में बढ़ती हिंसा, कटुता और अविश्वास की जड़ है- भय और अज्ञानता। इन परिस्थितियों में यदि कोई वास्तविक समाधान है, तो वह है अंतर्रात्मा की ओर लौटना, ध्यान की शक्ति से स्वयं को समझना और संपूर्ण मानवता को एकता के सूत्र में बांधना। जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान का समावेश हमें पूरे विश्व को एक नए दृष्टिकोण से देखने का नजरिया देता है। आध्यात्मिक ज्ञान आत्मज्ञान और आत्म स्वरूप से रुबरु कराता है। मन के कलुषित विचारों, भावनाओं को दूर कर उन्हें पवित्र, श्रेष्ठ, महान बना देता है। सर्व के प्रति मंगलकारी, हितकारी, परोपकारी विचार आने लगते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान की गहराई तो महासागर के समान है जिसमें जितने उतरते जाते हैं, उतना ही मन आनंद से भावविभोर होता जाता है। बहुजन हिताए, बहुजन सुखाए की भावना को गहराई से आत्मसात कर लेते हैं तो उस अवस्था में कोई समाज, देश, अपना और पराया नहीं रह जाता है। समूचा विश्व ही एक परिवार नजर आने लगता है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं जिन्हें आत्म ज्ञान, सच्चा ज्ञान, सद् ज्ञान की प्राप्ति होने के बाद वह दुर्दांत अपराधी से साधु, सन्यासी और सद् मार्गी बन गए। इस यात्रा में आध्यात्मिक ज्ञान और योग ने ही उन्हें नवजीवन दिया।

बदलाव की ओर पहला कदम मेरा हो...

जीवन में योग का समावेश हमारे व्यक्तित्व और कृतित्व में आपसी भाईचारा, प्रेम, स्नेह और विश्वास को बढ़ाता है। ज्ञान के प्रकाश से दुर्गुणों का अंधकार दूर होने से आत्म दीप जल जाता है जो आत्मा को दिव्य गुणों, विशेषताओं से संपन्न और भरपूर कर देता है। ऐसे प्रतिभा संपन्न, नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत आत्मा सभी की विश्वासपात्र और स्नेही बन जाती है। यह तभी संभव हो सकेगा, जब मन-बुद्धि में पूरा विश्वास होगा कि हम ही अतीत में देवी-देवता घराने के थे और निकट भविष्य नई दुनिया में देवी-देवता की नई भूमिका में होंगे। आत्म ज्ञान हमें स्वयं एवं परमात्मा में निश्चय और विश्वास जगाता है। मैं एक परम पवित्र, ज्योति स्वरूप, दिव्य, सर्वशक्तिमान आत्मा हूं। परमपिता परमात्मा की संतान हूं.... अंतर्मन में जब यह विश्वास बैठ जाता है तो बदलाव की शुरुआत उसी क्षण हो जाती है।

बदलाव की ओर पहला कदम मेरा हो...

जैसे बुराई संक्रामक होती है, वैसे ही अच्छाई भी संक्रामक होती है। हम सुधरेंगे- जग सुधरेगा। हम बदलेंगे- जग बदलेगा। स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है। एक-एक व्यक्ति खुद को बदलने, मूल्यनिष्ठ बनाने और जीवन को दिव्य गुणों से संजाने की यात्रा में जब बढ़ जाएगा तो वह दिन दूर नहीं जब यह वसुंधरा शांति, प्रेम, विश्वास, एकता और भाईचारा का पवित्र संगम बन जाएगी। जब एक-एक के जीवन में आध्यात्मिक प्रकाश का आत्मदीप जलेगा तो निश्चित रूप से स्वर्णिम दुनिया, सतयुगी दुनिया, पावन दुनिया की हमारी परिकल्पना इस धरा पर साकार रूप लेकर जीवन को आनंद से भर देगी।

विश्व एकता और विश्वास का आधार है-राजयोग

राजयोग ध्यान ही वह विधि और कला है जो आत्मा की यात्रा को पूर्ण करती है। आत्मा का परमज्योति, महाज्योति परमात्मा से मंगल मिलन कराता है। राजयोग से विचार दिव्य, महान, श्रेष्ठ बन जाते हैं। आत्मा की तलाश पूरी हो जाती है। राजयोग से मन, वचन, कर्म तीनों में एकरुपता आ जाती है। ऐसा साधक वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से ओतप्रोत होकर विश्व बंधुत्व के भाव को जीवन यात्रा का ध्येय वाक्य मानकर बढ़ता जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान इस बात का साक्षात प्रमाण है कि राजयोग मेडिटेशन सीखकर लाखों लोगों के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल गई है। उनका जीवन अध्यात्म के प्रकाश से प्रकाशित हो गया है। ऐसे लाखों साधक समाज में प्रेरक और आदर्श बनकर दूसरों के जीवन को नई राह दिखा रहे हैं। इसका मूल आधार है- स्व परिवर्तन और परमात्म ज्ञान।

जीवन प्रबंधन

भावनात्मक स्वस्थ होने पर परिस्थितियों को सरलता से पार किया जा सकता है

जीवन है तो परिस्थितियां आएंगी लेकिन खुशी-खुशी उनका सामना करना है

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

जीवन में हम बहुत सी चीजें देखते हैं और उनसे बहुत कुछ प्राप्त भी करते हैं। हमारे कई सपने होते हैं जो जीवन से जुड़े होते हैं, परिवार से जुड़े होते हैं, बच्चों से जुड़े होते हैं, अपने कैरियर को लेकर होते हैं, उन्हें प्राप्त करते जाते हैं। हर प्राप्ति हमें कहीं न कहीं संतुष्टि अवश्य देती है और हमें खुशी का एहसास कराती है। हमारी खुशी दूसरी अन्य चीजों पर डिपेंड हो जाती है। खुशी कहीं न कहीं मिलती है, फिर चली जाती है, फिर मिलती है और फिर चली जाती है। सारे दिन में हमारे सामने कई परिस्थितियां आती हैं। सारा दिन क्या है? यह परिस्थितियों की एक श्रृंखला है जो लगातार चलती ही रहती है, जैसे कि कोई फिल्म चल रही हो। एक दृश्य के बाद दूसरा दृश्य आता है, कोई दृश्य मेरे पक्ष में होगा तो कोई नहीं होगा। इसी प्रकार कोई व्यक्ति मेरे पक्ष में होगा, कोई नहीं होगा। अर्थात् जैसे मैं चाहती हूं वैसे, कोई चलेगा और कोई नहीं भी चलेगा। इसका मुख्य कारण यही है कि हमारी खुशी व्यक्ति और लोगों के ऊपर निर्भर कर रही है। इसीलिए खुशी मिलती है, फिर चली जाती है। अर्थात् एक दृश्य आया बहुत अच्छा, बच्चे समय पर सुबह उठ गए, तैयार भी हो गए और स्कूल चले भी गये तो इससे मुझे खुशी मिली। दूसरा दृश्य आया कि बच्चे समय पर तैयार तो हो गए, लेकिन उनको लेने के लिए बस ही नहीं आयी तो मुझे गाड़ी से छोड़ने के लिए जल्दी-जल्दी जाना पड़ा।

खुशी संस्कार है

हम अपने मन की शक्ति को परिस्थितियों को देते गए परिस्थितियां दिन-प्रतिदिन चुनौतीपूर्ण होती गईं। कभी अनुकूल, कभी अशांति का जो प्रतिशत था वह बढ़ता गया। इससे हमारे जीवन में स्थिरता कम और अशांति ज्यादा हो गई। फिर हमने अपने जीवन में देखना शुरू किया कि हमारा जीवन कहां है? तब हम अपने आप से प्रश्न पूछना प्रारंभ करते हैं कि सबकुछ तो हो रहा है। एक अच्छा पति, एक अच्छी पत्नी, दोनों नौकरी में है, अच्छा-खासा मासिक वेतन घर में आ रहा है। 35 वर्ष की आयु में ही मेरा दो मंजिला मकान बन चुका है। बाहर दोनों के लिए अलग-अलग गाड़ियां खड़ी हैं, बच्चों के लिए अलग, फिर भी हम खुश क्यों नहीं हैं? अब इससे ज्यादा और क्या चाहिए? लेकिन फिर भी अंदर में थोड़ा सा खालीपन है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि हमारी खुशी कहां है? खुशी हमारी निजी संपत्ति है। खुशी आत्मा का संस्कार है।

भावनात्मक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें

कहीं न कहीं हमने भावनात्मक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य से अलग कर दिया है। अगर उसको भी हम जीवन में उतनी ही प्राथमिकता दें जितना कि शारीरिक स्वास्थ्य को देते हैं तब हम जीवन की यात्रा में ठीक तरह से चल पाएंगे। एक है शारीरिक रूप से शक्तिहीन होना और एक है भावनात्मक रूप से शक्तिहीन होना। अब पांच मिनट पहले पता चला कि स्कूल छोड़ने जाना है, ठीक है। अगर मैं उस समय शांत रहूं, स्थिर रहूं, छोड़ने तो फिर भी जाना ही है, गाड़ी तो आपको फिर भी चलानी ही है। लेकिन गाड़ी हम किस स्थिति में चलायेंगे? दु:खी होकर? अगर हम भावनात्मक स्वास्थ्य को भी उतना ही महत्व दें कि ये सब परिस्थितियां और भावनात्मक स्वास्थ्य अलग-अलग नहीं है। यह तो एक प्रक्रिया है। यदि मैं भावनात्मक रूप से स्वस्थ हूं तो परिस्थितियों को बहुत ही सरलता से पार कर सकती हूं। पहले हम क्या करते हैं, परिस्थिति को संभालने के बारे में सोचते हैं जो बाद में भावनात्मक स्वास्थ्य के बारे में सोचते हैं।

स्वयं को चेक करें सोच का स्तर क्या है?

अभी लोग शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में इतना क्यों सोच रहे हैं? क्यों इतना ध्यान रखा जा रहा है? इसके लिए हमें बहुत ज्यादा पीछे जाने की आवश्यकता नहीं है। हम सिर्फ एक पीढ़ी पीछे जाते हैं और सिर्फ अपने पैरेंट्स को देखते हैं। वे कभी व्यायाम करने नहीं गए। उन्होंने कभी मिनरल वाटर नहीं पीया, उस समय भोजन का इतना ध्यान नहीं रखा जाता था, हम लोगों के यहां साधारण भोजन बनता था उसे ही सभी लोग खुशी-खुशी खाते थे। आज हमारे स्वास्थ्य पर इतना ध्यान क्यों दिया जा रहा है? क्योंकि भावनात्मक दबाव इतना ज्यादा है कि कोई न कोई समस्या शरीर के साथ चलती ही रहती है। हमने आत्मा का ध्यान ही नहीं रखा, उसके ही सारी समस्याएं आनी शुरू हो जाती हैं। अगर हम आत्मा का भी ध्यान रखें तो मन पर जो इतना ज्यादा दबाव है, इसके लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप व्यायाम करने तो जा रहे हो, उसमें भी अगर दो-तीन लोग इक्कट्ठे व्यायाम कर रहे हैं उस समय आप स्वयं को चेक जांचे करें कि हमारे सोच की गुणवत्ता क्या है? हम सेहत के लिए घूम रहे हैं लेकिन साथ-साथ नकारात्मक विचार उत्पन्न हो रहे हैं। इस थॉट्स का असर सिर्फ मन के साथ पूरे शरीर पर पड़ता है। जब तक हम यह महसूस नहीं करेंगे कि शारीरिक स्वास्थ्य पर भावनात्मक स्वास्थ्य का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है तब तक हम स्थिर नहीं रह सकते हैं।

भावनात्मक स्वास्थ्य रहना जरूरी

हम अपनी खुशी को थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं। कई तरह की परिस्थितियों को संभालने के लिए शारीरिक शक्ति भी चाहिए। आज यदि मैं बीमार हूं तो यह प्रश्न ही नहीं उठता है कि मैं गाड़ी चलाकर जाऊंगी। जब हम अपने जीवन में सभी परिस्थितियों को संभालते हैं तो क्या कभी हमारे मन में यह प्रश्न उठा कि पहले मैं अपनी शारीरिक क्षमता को देखूं या परिस्थिति को संभालू? तो जवाब मिलता है कि शारीरिक क्षमता के प्रति कुछ नहीं सोचना है, मुझे तो परिस्थिति पर ही सारा ध्यान केंद्रित करना है। मुझे यह पता है कि मैं शारीरिक क्षमता से ही परिस्थिति को हैंडल कर सकती हूं। यदि मैं बीमार हूं तो काम पर कौन जाएगा, फिर वहां काम क्या होगा ये दूसरी बात है। पहली बात यह है कि मैं ऑफिस जाऊंगी कैसे? इसलिए सारे दिन में मैं अपने शरीर का ध्यान जरूर रखती हूं। इसके लिए हमें शरीर को समय पर भोजन भी देना चाहिए। आप एक दिन भोजन छोड़ देंगे, दो दिन छोड़ देंगे, लेकिन कितने दिन तक छोड़ेंगे? मान लीजिए आप भागते-भागते भी खा रहे हैं और जंक फूड भी खा रहे हैं लेकिन आप खा तो लेते हो। चलो, आपने उपवास भी किया लेकिन कितने दिनों तक उपवास करेंगे? फिर उसके बाद आपको भोजन करना ही पड़ेगा। जीवित रहने के लिए और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन जरूरी है। यदि हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा, तभी ठीक से काम कर पाएंगे।

समस्या- समाधान

सफल योगी बनने के लिए साक्षी दृष्टा होना जरूरी

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

- राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

जिसे सच्चा योगी बनना है उसे मैं-पन के त्याग पर बहुत सूक्ष्मता से ध्यान देना चाहिए। कहां- कहां हमारे अंदर मैं-पन आ जाता है। इससे हम स्वयं को बचाते चलें, बचाना बिल्कुल सहज है। केवल हमें अवेयरनेस हो, जानकारी रहे कि मेरे अंदर मेरापन कहां आ गया। आप सभी ने मुरली में सुना हो कि यदि करनकरावनहार बाप की स्मृति सदा ही रहे कि बाबा करा रहा है तो तुम निरंतर योगी बन जाओ। मैं करता हूं, मेरी जिम्मेदारी है, मैंने ये किया, मुझे ये करना है, ये काम करने हैं.... ये मैं-पन मन को भारी कर देता है। इससे हम योगयुक्त नहीं रह पाते तो जिसे योगयुक्त होना है, उसे निरहंकारी बनना ही पड़ेगा।

हर चीज प्रोग्राम अनुसार चल रही है

जिनको महान योगी बनना हो उन्हें साक्षी दृष्टा हो जाना चाहिए। कौन क्या कर रहा है, बिल्कुल सरल शब्दों में हर व्यक्ति जो कुछ कर रहा है। वह तो उसे करना ही है न। प्रोग्राम है उसे करने का। बिना प्रोग्राम के कोई कुछ नहीं कर रहा है। हम क्या विशेष करते हैं। कोई कहे क्यों करते हैं, यह तो प्रोग्राम था। आप सुनने आ गए, कोई ऐसे ही कहने लगे क्यों सुनने आ गए यहां। हर चीज प्रोग्राम अनुसार चल रही है न। हर आत्मा को भी तो प्रोग्राम मिला हुआ है। ऐसे सिम्पल लैग्वेंज दे दें इसे जो व्यक्ति दूसरों के बारे में सोच रहा है। उसे अपने बारे में सोचने का तो अवसर ही नहीं मिलता। जो दूसरों को देख रहा है, वह अपने को देखना भूल जाते हैं। जो अपने को ही नहीं देखते तो बाबा भी उन्हें नहीं देखता। जिनकी नजर दूसरों पर है। उन पर बाबा की नजर नहीं पड़ती, इसलिए साक्षीभाव अपनाना।

भगवान हमारा संबंधी हो गया है

जो कुछ इस संसार में हो रहा है और जो कुछ होगा। उसे खेल की तरह देखना। जो कुछ हमें करना है, जो कत्तव्य निभाने हैं, जो जिम्मेदारी है उन्हें भी सहज और साक्षीभाव से करना। ये ज्ञानयुक्त आत्मा की पहचान है। इस तरह हम योग के मार्ग में आगे बढ़ते हैं। इस योग के सब्जेक्ट को दो हिस्सों में बांट दें। एक है इमोशनल तरीका अर्थात् भावनात्मक तरीका। संबंधों के रूप में बाबा को याद करना और दूसरा है बुद्धियोग। मन और बुद्धि से योग लगाना।

पहला तरीका बिल्कुल सिम्पल है। बाबा ने कहा है कि बच्चे तुमको नशा होना चाहिए कि भगवान तुम्हारा संबंधी बन गया है। भगवान हमारा संबंधी हो गया है। बाबा मेरा है, इसको सच्चे दिल से स्वीकार कर लेना। ये योग की सरल विधि है। जिसको कुछ भी न हो... बाबा मेरा है और ये छोटी बात नहीं है। बाबा पर अधिकार मेरा है। इस पर हमें चिंतन को आगे बढ़ाना है... बाबा मेरा।

योगी का सरलचित और सहज भाव होना जरूरी

योगी वो जो सरलचित हो, जिन्होंने जीवन को सहज भाव से जीना सीख लिया हो। हम सभी को जीवन प्राप्त है, जीवन जीने का आनंद प्राप्त है। किसी को कदम-कदम पर कांटों पर चलना पड़ रहा है। किसी का जीवन समस्याओं से भरा है और कोई इस जीवन को सुखपूर्वक तय कर रहा है। सब अपने ऊपर है। यह एक कला है। कैसे सहज भाव से इस यात्रा पर आगे बढ़ा जाए। ये यात्रा है और इसमें हमें इसे सहज भाव से जीना है।

ऐसे करें योग की शुरुआत...

संकल्प करें मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूं..मुझसे निकली शक्तियों की किरणों से माया के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं... मस्तक के मध्य भृकुटी सिंहासन पर विराजमान मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूं... मुझ से किरणें निकलकर चारों ओर फैल रही हैं। ऊपर परमधाम में ज्ञान सूर्य पर बुद्धि को स्थिर कर दें... ऊपर ज्ञान सूरज की शक्तियों की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं... मुझसे चारों ओर फैल रही हैं... मैं पवित्रता का फरिश्ता हूं... पवित्रता की देवी हूं... परमधाम में पवित्रता के सागर की पवित्र किरणों की मुझ पर बरसात हो रही है...इस तरह का अभ्यास दिन में बीच-बीच में करते रहें। जो बहुत अभ्यास करते हैं योग उनका ही सफल होता है। अभिमन्यु की तरह अपने ऊपर माया का चक्रव्यू बनवाना है या रास्ता क्लीयर रखना है. आपके हाथ में है। योग नहीं होता तो अनेक व्यर्थ संकल्प हमारे चारों ओर जाल-जंजाल बना देते हैं। योग एक अस्त्र है जो इस जंजाल को काट देता है। योग अभ्यास करते समय ही बाबा का आह्वान करें। बापदादा दोनों को बुलाओ। देखो दोनों उतरते-उतरते आपके घर में आ गए।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 May. 2025
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादकः बीके कोमल » संयुक्त संपादकः बीके पुष्पेन्द्र